Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ کَرِهَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ

(सूरः तौबा : 33)

अनुवाद : वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीन-ए--हक़ के साथ भेजा ताकि वह उसे सब दीनों पर विजय कर दे। चाहे मुशरीक केसा ही न पसंद करे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक 13

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

17 रमज़ान 1445 हिज्री कमरी, 28 अमान 1403 हिज्री शम्सी, 28 मार्च 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के शुहदा को दफ़न करने के लिए तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

उनको उनके ज़ख़्मों समेत ही कफ़न दे दो क्योंकि मैं उन पर गवाह हूँ और कोई मुस्लमान ऐसा नहीं जो अल्लाह की राह में ज़ख़्मी किया जाए परंतु वह क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस का ख़ून बह रहा होगा और उस का रंग ज़ाफ़रान का होगा और उस की ख़ुशबू कस्तूरी की हो गई

हे गिरोह अंसार मेरे पास आओ मैं साबित बिन वाहदाह हूँ, यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाक़ई क़तल हो गए हैं तो अल्लाह ज़िंदा है वह कभी नहीं मरेगा

इसलिए तुम अपने दीन की तरफ़ से लड़ो, अल्लाह तुम्हें विजय करेगा और तुम्हारी मदद करेगा

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

मुख़य्रीक यहूद में से आगे निकल गया और सलमान अहल-ए-फ़ारस में से आगे निकल गया और बिलाल अहल-ए-हब्शा में से आगे निकल गया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मुझे अल्लाह तआला से इस हालत में मिलना कि मैं सेराब हूँ अर्थात अच्छी तरह खाया पिया हूँ उस से ज़्यादा महबूब है कि मैं उसे प्यासा होने की हालत में मिलूँ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो उहद के दिन सबसे पहले शहीद हुए, उनकी तदफ़ीन के अवसर पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

अब्दुल्लाह बिन अम्र और अम्र बिन जमूह को एक ही क़ब्र में दफ़न करो क्योंकि उनके दरमयान इख़लास और मुहब्बत थी

हज़रत इमाम शाफ़ी रहमहुल्लाह वर्णन करते हैं कि नियमित रिवायात से यह बात पक्की तौर पर मालूम होती है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा उहद के शुहदा का जनाज़ा नहीं पढ़ा और जिन रिवायात

मैं वर्णन आया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शुहदा का जनाज़ा पढ़ा और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो पर सत्तर तकबीरात कही थीं यह बात दरुस्त नहीं है और जहां तक हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो के

रिवायत का ताल्लुक़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ वर्ष के बाद इन शुहदा का जनाज़ा पढ़ा था तो इस रिवायत में इस बात का वर्णन हुआ है कि यह आठ वर्ष बाद का वाक़िया है

जंग-ए-उहद में सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की शहादत की घटनाओं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-वफ़ा का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

इन्सानियत के तबाही से बचने के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 फ़रवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-उहद के वाक़ियात के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के पहलू और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ इशक़-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़, उसका वर्णन हो रहा था। इस हवाले से हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का भी वर्णन मिलता है। हज़रत ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़व-ए-उहद में बड़ी बहादुरी और जवाँमर्दी से लड़ते हुए शहादत का रुत्बा पाया। तीरों की ज़द में आ गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को तेराह से अधिक घाव लगे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ख़्मों से निढाल पड़े थे कि पास से सफ़वान बिन उमय्या गुज़रा। उसने उन्हें पहचान कर हमला कर के शहीद कर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

दिया। फिर उनके अंग भी काटे और कहा कि यह उन लोगों में से है जिन्हों ने बदर में अबू अली को क़तल किया था अर्थात मेरे बाप उमय्या बिन खलफ़ को क़तल किया था। अब मुझे अवसर मिला है कि इन अस्हाब-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में से बेहतरीन लोगों को क़तल करूँ और अपना दिल ठंडा करूँ। उसने हज़रत इब्ने कौकल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़अरिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ओस बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया। हज़रत ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो जो कि आपके चचाज़ाद भाई थे इन दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया।

(अल् इस्तेआब , भाग 2 पृष्ठ 3-4 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

रिवायत है कि उहद के दिन हज़रत अब्बास बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो ऊंची आवाज़ से कह रहे थे कि हे मुस्लमानों के गिरोह अल्लाह और अपने नबी से जुड़े रहो। जो मुसीबत तुम्हें पहुंची है यह अपने नबी की ना-फ़रमानी से पहुंची है। वह तुम्हें मदद का वादा देता था लेकिन तुमने सब्र नहीं किया। फिर हज़रत अब्बास बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो अपना कवच और अपनी ज़िरह उतारी और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि क्या आपको उस की ज़रूरत है? ख़ारिजा ने कहा नहीं। जिस चीज़ की तुम्हें इच्छा है वही मैं भी चाहता हूँ अर्थात शहादत। फिर वह सब दुश्मन से भिड़ गए। अब्बास बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि हमारे देखते हुए अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ पहुंची तो हमारा अपने रब के हुज़ूर क्या बहाना होगा और हज़रत ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हो यह कहते थे कि अपने रब के हुज़ूर हमारे पास न तो कोई बहाना होगा और न ही कोई दलील। हज़रत अब्बास बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो को सुफ़ियान बिन अब्दुल शमस सलमी ने शहीद किया और ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को तीरों की वजह से जिस्म पर दस से अधिक ज़ख़म लगे।

(किताबुल् मगाज़ी भाग 1 पृष्ठ 227-228 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर एक हवाला में है कि ग़ज़व-ए-उहद के दिन हज़रत मालिक दुख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से गुज़रे। हज़रत ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ख़मों से चूर बैठे हुए थे। उनको तेराह के क़रीब घायल करने वाले घाव आए थे। हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा कि क्या आपको मालूम नहीं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद कर दिए गए हैं। यह काफ़िरों के दुबारा हमले के बाद का वर्णन है। हज़रत ख़ारिजा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शहीद कर दिया गया है तो यक़ीनन अल्लाह ज़िंदा है और वह नहीं मरेगा। यह था उन लोगों का ईमान। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैग़ाम पहुंचा दिया तुम भी अपने दीन के लिए क़िताल करो।

(किताबुल् मगाज़ी भाग 1 पृष्ठ 243 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) लेकिन अब दुश्मन लड़ रहा है तुम्हारे से तो तुम लड़ो। हमारा काम भी अल्लाह तआला की ख़ातिर जानें क़ुर्बान करना है :

फिर हज़रत शम्मास बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वर्णन है। हज़रत शमास बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़व-ए-बदर और उहद में शामिल हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उदह के ग़ज़वा में बहुत जाँ-फ़िशानी से लड़े। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने शमास बिन उसमान को ढाल की मानिंद पाया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाएं या बाएं जिस तरफ़ भी नज़र उठाते शमास को वहीं पाते जो जंग-ए-उहद में अपनी तलवार से बचाव कर रहे थे। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहोशी तारी हो गई जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला हुआ और पत्थर आके लगा। हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने आपको आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने ढाल बना लिया था यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो शदीद ज़ख़मी हो गए और आप अर्थात हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो को उसी हालत में मदीना उठा कर लाया गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो मैँ अभी कुछ जान बाक़ी थी। उनको हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हाँ ले जाया गया। हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि क्या मेरे चचाज़ाद भाई को मेरे सिवा किसी और के हाँ ले जाया जाएगा। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन्हें हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास उठा कर ले जाओ। अतः आपको वहीं ले जाया गया और आपने उन्ही के घर वफ़ात पाई। आप उहद से ज़ख़मी हो के आए थे। फिर आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो को मुक़ाम-ए-उहद में ले जा कर उन्ही कपड़ों में दफ़न किया गया। दो दिन बाद मदीना में वफ़ात हो गई लेकिन दफ़न उनको उहद में जा के किया गया। जब जंग के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ख़मी हालत में उठा कर मदीना लाया गया तो वहां एक दिन और एक रात तक ज़िंदा रहे थे और इस दौरान कहा जाता है कि उन्होंने कुछ खाया पिया नहीं। इंतेहाई कमज़ोरी की हालत थी बल्कि बेहोशी की हालत थी। हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात चौंतीस वर्ष की आयु में हुई थी। नौजवान थे।

हज़रत शमास बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में तारीख़ ने ऐसा वाक़िया महफ़ूज़ किया है जो उनकी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की एक उदाहरण बन गया है और इस्लाम की ख़ातिर क़ुर्बानी के आला तरीन मयार क़ायम करने की भी मिसाल है। जंग-ए-उहद में जहां हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो की इशक़-ओ-मुहब्बत की दास्तान का वर्णन मिलता है कि किस तरह उन्होंने अपना हाथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरा मुबारक के सामने रखा कि कोई तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को न लगे वहां हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बड़ा महान् किरदार अदा किया। हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए और हर हमला अपने ऊपर लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाया कि शमास को यदि मैं किसी चीज़ से समानता दूं तो ढाल से समानता दूँगा कि वह उहद के मैदान में मेरे लिए एक ढाल ही तो बन गया था। वह मेरे आगे पीछे दाएं और बाएं हिफ़ाज़त करते हुए आख़िर दम तक लड़ता रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस तरफ़ नज़र डालते आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं शमास इंतेहाई बहादुरी से वहां मुझे लड़ते हुए नज़र आता। जब दुश्मन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमले में कामयाब हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ग़शी की कैफ़ीयत तारी हुई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गिर गए तब भी शमास ही ढाल बन कर आगे खड़े रहे यहां तक कि ख़ुद शदीद ज़ख़मी हो गए। इसी हालत में उन्हें मदीना लाया गया। हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा यह मेरे चचा के बेटे हैं। मैं उनकी क़रीबी हूँ। रिश्तेदार हूँ इसलिए मेरे घर में उनकी तीमार-दारी और ईलाज इत्यादि होना चाहिए लेकिन ज़ख़मों की शिद्दत की वजह से डेढ़ दो दिन बाद ही उनकी वफ़ात हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शमास को भी उस के कपड़ों में ही दफ़न किया जाए जिस तरह बाक़ी शुहदा को किया गया है।

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3, पृष्ठ 186 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर हज़रत नुमान बन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वर्णन है। हज़रत नुमान बन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़व-ए-बदर-ओ-उहद में शरीक हुए और ग़ज़व-ए-उहद में शहीद हुए। उन्हें सफ़वान बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो ने शहीद किया था। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत नुमान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो को आबान बिन सईद ने शहीद किया था। हज़रत नुमान बन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़्याद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उबादा बिन हस्हास रज़ियल्लाहु अन्हो को ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया था।

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3, पृष्ठ 414 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(ओसोदुल गाबा, भाग 3 , पृष्ठ 157 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया)(सीरत इब्ने हशशाम, पृष्ठ 468 560 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) (उम्दतुल कारी, भाग 14 पृष्ठ 183 प्रकाशन दारुल अह्या अल् तुर्रास बेरूत)

हज़रत नुमान बन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़व-ए-उहद के लिए निकलते और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अब्दुल्लाह बिन ऊबे बिन सलूल से मश्वरा के वक़्त अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बख़ुदा मैं जन्नत में ज़रूर दाख़िल हूँगा। बड़ी तहदी से फ़र्मा रहे हैं। कहते हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मैं जन्नत में ज़रूर दाख़िल हूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह कैसे? तो हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया इस वजह से कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और मैं लड़ाई से हरगिज़ नहीं भागूँगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : तुमने सच्च कहा। इसलिए वह उसी रोज़ शहीद हो गए।

(ओसोदुल गाबा, भाग 5, पृष्ठ 322 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

ख़ालिद बिन अबू मालिक जादी रिवायत करते हैं कि मैं ने अपने वालिद की किताब में यह रिवायत पाई कि हज़रत नुमान बिन कौकल अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ की थी कि मुझे तेरी क़सम हे मेरे रब अभी सूरज ग़ुरूब नहीं होगा कि मैं अपने लंगड़ेपन

के साथ जन्नत की सरसब्ज़ी में चल रहा हूँगा। इसलिए वह उसी रोज़ शहीद हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने उसकी दुआ क़बूल कर ली क्योंकि मैंने उसे देखा, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कशफ़ी नज़ारा देखा और यह अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने उसको देखा कि वह जन्नत में चल रहा था और इस में किसी किस्म का लंगड़ापन या लड़खड़ाहट नहीं थी।

(अल् सहाबा, भाग 4, पृष्ठ 317 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर हज़रत साबित बिन दह्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो का है। साबित बिन दह्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी ग़ज़वा-ए-उहद में नुमायां शिरकत की। (सैरुल सहाबा, भाग 3, पृष्ठ 552 दारुल इशात कराची) उनका नुमायां किरदार है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर के बाद मुस्लमानों में से कुछ ने कहा अब जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो तुम अपनी क़ौम के पास लौट चलो वे तुम्हें अमान देंगे। इस पर कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो क्या तुम अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन और उसके पैग़ाम के लिए नहीं लड़ोगे यहां तक कि तुम अपने रब के हुज़ूर शहीद हो कर हाज़िर हो जाओ?

हज़रत साबित बिन दह्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने अंसार से कहा। हे अंसार के गिरोह यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो अल्लाह तआला ज़िंदा है उसे मौत नहीं आ सकती। अपने दीन के लिए क़िताल करो। अल्लाह तआला तुम्हें फ़तह-ओ-कामरानी अता करने वाला है। यह सुनकर अंसारी मुस्लमानों का एक गिरोह उठा और उन्होंने हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मिलकर मुशरेकीन के इस गिरोह पर हमला कर दिया जिसमें ख़ालिद बिन वलीद, अकबा बिन अबुजहल, अम्र बिन आस और ज़िरार बिन ख़त्ताब थे। मुस्लमानों की इस छोटी सी जमात को हमला करते देखकर ख़ालिद बिन वलीद ने उन पर सख़्त जवाबी हमला किया और साबित बिन दह्दाह और उनके अंसारी साथियों को शहीद कर दिया।

(अल्सीतुल हल्बिया, भाग 2 , पृष्ठ 309 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक और रिवायत में वर्णन हुआ है कि अब्दुल्लाह बिन उम्र ख़त्मी कहते हैं साबित बिन दह्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो उहद के दिन सामने आए और मुस्लमान उस वक़्त मुंतशिर और परेशान हाल थे। यह ऊंची आवाज़ में पुकारने लगे कि हे अंसार! मेरे पास आओ। मैं साबित बिन दहदाह हूँ। अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाक़ई क़तल हो गए हैं तो अल्लाह ज़िंदा है वह कभी नहीं मरेगा। इसलिए तुम अपने दीन की तरफ़ से लड़ो अल्लाह तुम्हें विजय करेगा और तुम्हारी मदद करेगा।

इसलिए एक जमात अंसार की उनके पास जमा हो गई। यह अंसारी थे और मुस्लमानों को अपने साथ लेकर कुफ़्फ़ार पर हमला करने लगे। उनके मुक़ाबले पर काफ़िरों का एक सख़्त लश्कर आया जिसमें उनके सरदार ख़ालिद बिन वलीद, अम्र बिन आस, अक्रमा बिन अबुजहल और ज़रार बिन ख़त्ताब थे। ये सब लोग मिलकर उन पर हमला करने लगे। साबित रज़ियल्लाहु अन्होपर ख़ालिद बिन वलीद ने नेज़े से हमला किया और नेज़ा उनके पार कर दिया। साबित शहीद हो कर गिर पड़े और उनके साथ और जो अंसार थे वे भी शहीद हो गए। इसी वजह से कहा जाता है कि उस दिन सब मुस्लमानों के आख़िर में यही लोग हुए।

एक रिवायत में है कि ख़ालिद ने बढ़कर नेज़ा मारा जिस से हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ख़मी हो कर ज़मीन पर गिर पड़े। लोग उठा कर लाए और ईलाज शुरू किया। उस वक़्त तो ख़ून बंद हो गया और वह अच्छे हो गए लेकिन ग़ज़व-ए-हुदैबिया के बाद सहसा घाव फिर फट गया और उसके सदमा से उन्होंने वफ़ात पाई। बहरहाल यह भी एक रिवायत है। हज़रत जाबिर बिन समरह रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत साबित बिन दह्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो के जनाज़े के साथ पैदल तशरीफ़ ले गए थे और घोड़े पर बैठ कर वापस आए थे।

(ओसोदुल गाबा, भाग 1, पृष्ठ 440 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)
(सैरुल सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 552 दारुल ईशात कराची)(तिरमेज़ी अबवाब अल्जनायज़, बाब ماجاء فی الرخصة فی ذٰلك, हदीस : 1014)

इस रिवायत से भी लगता है कि यह जो रिवायत है कि ग़ज़व-ए-हुदैबिया के बाद ज़ख़म फटने से (फ़ौत) हुए थे। यह कमज़ोर रिवायत है। उसी अवसर पर ही शहीद हुए थे।

एक ख़ानदान के चार लोगों की शहादत के बारे में वर्णन मिलता है। साबित बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो और रिफ़ाफ़ा बिन वक़श रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों भाई उहद के दिन शहीद हुए थे और उनके हमराह साबित बिन वक़श रज़ियल्लाहु अन्हो के दो बेटे सलमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो और अमर बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो भी शहीद हुए थे। अम्र बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम उसेरिम भी वर्णन हुआ है और उन सब का संबंध अंसार के क़बीले बनू अब्दुल शहल से था।

(उद्धृत ओसोदुल गाबा, भाग 1 , पृष्ठ 458-459 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

रिफ़ाआ बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो बूढ़े आदमी थे। रिफ़ाआ और साबित दोनों भाईयों ने जंग-ए-उहद में इकट्ठे क़िताल किया। रिफ़ाआ को ख़ालिद बिन वलीद ने शहीद किया। (उद्धृत ओसोदुल गाबा, भाग 2 पृष्ठ 288 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

साबित बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया इस प्रकार वर्णन हुआ है। इब्न-ए-इसहाक़ ने लिखा है कि जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद की जंग के लिए तशरीफ़ ले गए तो साबित बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो और हुसैल बिन जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो जिन का नाम यमान था और यह हुज़ैफ़ा बिन यमान के बाप थे वे दोनों उम्र रसीदा थे और उस क़िले में थे जिसमें मुस्लमानों की औरतें और बच्चे हिफ़ाज़त के लिए पनाह गज़ीन थे। उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि तुम किस चीज़ का इंतेज़ार कर रहे हो? हमारी ज़्यादा उम्र तो बाक़ी नहीं रही। अगर हम आज न मरे तो कल ज़रूर मर जाऐंगे। क्या हम भी अपनी तलवारें न उठाएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जा मिलें। शायद अल्लाह तआला हमें शहादत नसीब फ़र्मा दे। फिर ये दोनों तलवार पकड़ कर कुफ़्फ़ार पर जा पड़े और लोगों में मिल-जुल गए अर्थात जंग में शामिल हो गए।

(अल् सीरतुल नब्विय्या ले इब्ने हशशाम, पृष्ठ 537-538 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

अम्र बिन साबित या उसेरिम भी उनका नाम था। अम्र बिन साबित बिन वक्श अंसारी जैसा कि मैंने कहा उसेरिम के नाम से प्रसिद्ध थे। उनकी माता हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन थीं। ये ग़ज़व-ए-उहद के दिन नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद मुस्लमान हुए। उन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद वह इस्लाम लाए और अपने घोड़े पर सवार हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जा मिले। मुस्लमानों से मिलकर जिहाद करते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गए।

(इन्साईकलोपीडिया, भाग 6, पृष्ठ 358 दारुस सलाम रिसर्च सैंटर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आप अर्थात अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि मुझे ऐसे शख़्स के मुताल्लिक़ बताओ जिसने कभी नमाज़ नहीं पढ़ी और वह जन्नती है? तो लोगों को इस का इलम नहीं था। आपसे पूछने लगे कि वह कौन है? तो आप ने कहा कि वह उसेरिम बिन उसेरिम है अर्थात अम्र बिन साबित। एक रिवायत में है कि उसेरिम अपनी क़ौम के सामने इस्लाम का इंकार करते थे। जब ग़ज़वा उहद हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रवाना हो चुके थे। उसेरिम के सामने इस्लाम की हक़ीक़त वाज़िह हो गई तो उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर अपनी तलवार लेकर अपनी क़ौम के पास आए और लोगों में जा घुसे और जंग करने लगे। यहां तक कि ज़ख़्मों ने उन्हें निढाल कर दिया। इसी अस्ना में बनू अब्दुल अशहल के लोग अपने शुहदा की लाशें तलाश कर रहे थे कि अचानक उन पर नज़र पड़ी। हैरान हो कर कहने लगे यह तो उसेरिम है लेकिन यहां उसे कौन लाया है? हम तो उसे छोड़कर आए थे कि वह इस्लाम से इंकारी है। फिर उन्होंने उनसे पूछा हे उसेरिम! तुम यहां कैसे पहुंचे? क्या अपनी क़ौम की ग़ैरत की वजह से या इस्लाम से लगाव की वजह से? उन्होंने कहा कि इस्लाम से लगाव की वजह से अर्थात कि इस्लाम को मैंने सच्चा माना है इसलिए मैं आया हूँ। मैं अल्लाह पर और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ला कर मुस्लमान हुआ हूँ और अपनी तलवार लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मैं लड़ता रहा यहां तक कि मेरी यह हालत हो गई जो तुम लोग देख रहे हो। फिर उन्होंने लोगों के हाथों में दम तोड़ दिया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस का वर्णन हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह जन्नती है।

(الاصابه فی تمییز الصحابه, भाग 4 पृष्ठ 501 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

मैं पहले जो रुक गया था इसलिए कि आपने फ़रमाया कि वह जन्नती है वहां रज़ियल्लाहु अन्हो लिखा हुआ था हालाँकि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लिखना चाहिए था तो ग़लतफ़हमी शायद हो रही थी कि किसी सहाबी ने ना कहा हो। बहरहाल इस से स्पष्ट हो जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह जन्नती है।

और पहली जो रिवायत है वह भी दरुस्त इस लिहाज़ से लगती है कि बग़ैर नमाज़ें पढ़े जो जन्नत में चला गया वह यह है। आख़िरी वक़्त में आए और शहादत का रुतबा पाया।

इस ख़ानदान के चौथे शहीद हज़रत सलमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

हज़रत सलमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो का पूरा नाम सलमा बिन साबित बिन वक्श है। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़व-ए-बदर में शरीक हुए। ग़ज़व-ए--उहद में अबू सुफ़ियान ने हज़रत सलमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया था। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद हज़रत साबित बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो और चचा हज़रत रिफ़ाआ बिन वक्श रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके भ ा ईहज़रत अम्र बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो भी ग़ज़व-ए-उहद में शहीद हुए थे। इस ख़ानदान के बहुत सारे अफ़राद ग़ज़व-ए-उहद में शरीक हुए।

(अल्तबकातुल कुबरी लेइब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 337 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) (ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल् साहाबा, भाग 2 , पृष्ठ 291 प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई.)

मुखय्येरीक़ एक यहूदी था और बनू नज़ीर में से था। मुहम्मद बिन उम्र अस्लमी ने वर्णन किया कि यह इस्लाम ले आया था और कुछ ने कहा कि यह बनू क़ेनुक़ा में से था। कुछ के नज़दीक यह बनू सालबा बिन फ़ितयून में से था। यह यहूद के बड़े उल्मा में से था। उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आप सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की सिफ़ात और अपने इल्म से पहचान लिया था। लेकिन इस पर अपने दीन की मुहब्बत विजय रही। ईमान नहीं लाया। हफ़्ता के दिन उसने कहा कि हे यहूद की जमात! अल्लाह की क़सम तुम जानते हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम) की मदद करना तुम पर हक़ वाजिब है अर्थात कि जुमा को लश्कर उहद रवाना हुआ था तो उसने हफ़्ता को अगले दिन कहा। लोगों ने कहा कि आज तो सबत का दिन है। आज तो कोई जंग वाली बात नहीं है। उसने कहा तुम्हारे लिए कोई सबत नहीं। फिर अपनी क़ौम के लोगों को कहा कि अगर मैं आज क़तल हो गया तो मेरा माल मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) का होगा वह जो चाहें इस में तसर्रुफ़ करें। फिर अपने हथियार थाम कर चल पड़ा। जब लड़ाई हुई तो यह लड़ते हुए शहीद हो गया तो रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मुखय्येरीक़ यहूद में सबसे बेहतर है

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुखय्येरीक़ी यहूद में से आगे निकल गया और सलमान फ़ारस वालों में से आगे निकल गया और बिलाल हब्शा वालों में से आगे निकल गया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4 , पृष्ठ 212 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक सीरत निगार ने मुखय्येरीक़ के बारे में लिखा है कि एक राय यह है कि उसने इस्लाम की ख़ातिर कुफ़्फ़ार से लड़ते लड़ते अपनी जान क़ुर्बान कर दी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान-ए-मुबारक से उसके हक़ में तौसीफ़ी कलिमात जारी हुए। इसके आधार पर असंख्य सीरत निगारों और तारीख़ दानों ने मुख़य्रीक को मुस्लमान गरदाना है जिनमें इब्न-ए-हशाम, सुहेली, इब्ने हिज्र, इब्ने अक्सीर, बिलाज़री, क़ाज़ी अयाज़ और ईमाम नववी और अन्य शामिल हैं।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6, पृष्ठ 604)

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। तारीख़ में लिखा है कि ख़ुदा और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ने उनको समस्त दुनिया से बेनयाज़ कर दिया था। उन्हें अगर कोई इच्छा थी तो केवल यह कि जान-ए-अज़ीज़ किसी तरह राह-ए-ख़ुदा मैं निसार हो जाए। इसलिए उनकी यह इच्छा पूरी हुई और مُجَدَّعٌ فِي اللهِ अर्थात ख़ुदा की राह में कान कटा, उनके नाम का इमतेयाज़ी निशान हो गया।

उनकी शहादत से क़बल की एक मक़बूल दुआ यह भी थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में है कि आपकी दुआ किस तरह क़बूल हुई थी? आपकी शहादत से पूर्व उनकी दुआ की क़बूलियत का एक वाक़िया प्रसिद्ध है। इसहाक़ बिन साद बिन अबी विक्कास अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेरे वालिद अर्थात साद से ग़ज़व-ए-उहद के दिन कहा आओ! अल्लाह तआला से दुआ करें। इसलिए दोनों एक जानिब हो गए। पहले हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ की कि हे अल्लाह जिस वक़्त मैं कल दुश्मनों से मिलूँ तो मेरा मुक़ाबला ऐसे शख़्स से हो जो हमला करने में सख़्त हो, बड़ा सख़्त बहादुर दुश्मन हो और उसका रोब विजय हो। अतः मैं उस से लड़ूँ और उसको तेरी राह में क़तल कर दूं और उसके हथियारों को ले लूं। इस पर अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ि-यल्लाहु अन्हो ने आमीन कही। इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह दुआ की। पहले, पहले की दुआ थी। अब अब्दुल्लाह बिन जह्श की यह दुआ थी कि हे अल्लाह!कल मेरे सामने ऐसा शख़्स आए जो हमला करने में सख़्त हो और उस का रोब विजय हो और इस से मैं तेरी ख़ातिर क़िताल करूँ और वह मुझसे क़िताल करे। वह विजय आकर मुझे क़तल कर दे और मुझको पकड़ कर मेरी नाक कान काट डाले। अतः जिस वक़्त मैं तेरे हुज़ूर हाज़िर हूँ तो तू मुझसे पूछे कि हे अब्दु-ल्लाह! किस की राह में तेरी नाक और तेरे दोनों कान काटे गए हैं? मैं अर्ज़ करूँ कि अल्लाह! तेरी राह में और तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राह में। जवाब में तो यह कहे कि तू ने सच्च कहा। अर्थात अल्लाह तआला से यह इच्छा रखी कि अल्लाह तआला भी कहे कि तू ने सच्च कहा। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ियल्लाहु अन्हो की दुआ मेरी दुआ से बेहतर थी इसलिए कि अख़ीर दिन में मैं ने उनकी नाक और दोनों कानों को देखाकि एक धागे में लटके थे। (ओसोदुल गाबा, भाग 3 पृष्ठ 194 से 196 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) अर्थात कटे हुए थे और उन्हें पिरोया हुआ था।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का अल्लाह तआला से प्यार का अजीब अंदाज़ होता था। हज़रत मतलब बिन अब्दुल्लाह बिन हन् तब रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस रोज़ उहद की जानिब रवाना हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रास्ते में मदीना के क़रीब एक जगह शेख़ीन के पास रात क़ियाम किया जहां हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा एक भुनी हुई दस्ती लाईं जिस में से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नोश फ़रमाया इसी तरह नबीज़ लाईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबीज़ भी पी। यह भीए क किस्म का खाना है जो हरेरे की तरह पतला होता है। फिर एक व्यक्ति ने वहनबीज़ वाला पियाला ले लिया और इस में से कुछ पिया। फिर वह पयाला हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने ले लिया और इस को ख़त्म कर दिया। एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि कुछ मुझे भी दे दो। तुम्हें मालूम है कि कल सुबह तुम कहाँ जाओगे? अर्थात जंग होनी है क्या पता किस ने शहीद होना है किस ने ज़िंदा रहना है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हाँ मुझे मालूम है मुझे अपनी शहादत का यक़ीन है। फिर कहने लगे कि मुझे अल्लाह तआला से इस हालत में मिलना कि मैं सेराब हूँ अर्थात अच्छी तरह खाया पिया हो इस से ज़्यादा महबूब है कि मैं उसे प्यासा होने की हालत मिलूँ।

(अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 3 प्रकाशन67 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

अल्लाह तआला से मिलना तो है तो मैं अच्छी तरह सेराब हो के मिलूँ। अल्लाह तआला से यह मेरी ख़ाहिश है इसलिए मैं यह पी रहा हूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का अल्लाह तआला से प्यार का यह अजीब अंदाज़ है और इस के लिए उनकी तैयारी के भी अजीब रंग हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हम्ज़ा बिन अबुदल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हो को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया था। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो के मामूं थे और शहादत के वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हो की उम्र चालीस वर्ष से कुछ अधिक थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के जायदाद के वली बने और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बेटे को ख़ैबर में माल ख़रीद दिया।

(ओसोदुल गाबा, भाग 3 पृष्ठ 196 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर हज़रत अबू साद खेसमा बिन अबू खेसमा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत और इसके लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दुआ की दरख़ास्त का वर्णन यूं मिलता है। उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दुआ का निवेदन किया इस का वर्णन मिलता है कि मुहम्मद बिन उम्र ने वर्णन किया है कि ख़ेसमा ने उहद के दिन अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मैं बदर की जंग में शिरकत नहीं कर सका था। अल्लाह की क़सम मैं इस पर हरीस था यहां तक कि मैंने बदर में जाने के लिए क़ुरआ डाला तो मेरे बेटे साद बिन ख़ेसमा का क़ुरआ निकला और उसने बदर में शहादत हासिल की और पिछली रात मैंने ख़ाब में इस को बहुत अच्छी सूरत में देखा। वह जन्नत के बाग़ों और नहरों में सैर कर रहा था और कह रहा था कि आप हमारे पास आ जाऐं। हम जन्नत में साथ होंगे। मैंने अपने रब के वादे को हक़ पाया है और अल्लाह की क़सम! मैं इस की जन्नत में रिफ़ाक़त का मुश्ताक़ हूँ अर्थात मैं चाहता हूँ कि वहां जा के उसे मिलूँ। तो उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला से दुआ करें कि वह मुझे शहादत और जन्नत में उसकी रिफ़ाक़त अता करे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ की तो वह उहद में शहीद हो गए।

(सिबलुल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 219 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(मुस्तदरक, भाग 3, पृष्ठ 399 हदीस 4929किताब मारेफ़तुल् सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो)

एक रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वर्णन है। यह इस तरह वर्णन है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़व-ए-उहद के लिए निकलने का इरादा किया तो अपने बेटे हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनसे कहा कि हे मेरे बेटे मैं देखता हूँ कि मैं अव्वलीन शुहदा में से हूँगा और अल्लाह की क़सम मैं अपने पीछे रसूलुल्लाह सल्ल-

ल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात के बाद तुम्हारे इलावा किसी को नहीं छोड़ के जा रहा जो मुझे ज़्यादा अज़ीज़ हों अर्थात यह दो हस्तियाँ हैं जो मुझे दुनिया में प्यारी हैं सबसे पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात इसके बाद तुम मेरे बेटे। मेरे ज़िम्मा कुछ क़र्ज़ है मेरा वह क़र्ज़ मेरी तरफ़ से अदा कर देना और मैं तुम्हें तुम्हारी बहनों के साथ हुस्न-ए-सुलूक की वसीयत करता हूँ। अपनी बहनों से हुस्न-ए-सुलूक करना। उनके हक़ न मारना। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि अगली सुबह मेरे वालिद साहिब सबसे पहले शहीद हुए और दुश्मनों ने उनकी नाक और कान काट डाले। (ओसोदुल गाबा, भाग 3 पृष्ठ 344 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के शुहदा को दफ़न करने के लिए तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको उनके ज़ख़्मों समेत ही कफ़न दे दो क्योंकि मैं उन पर गवाह हूँ और कोई मुस्लमान ऐसा नहीं जो अल्लाह की राह में ज़ख़मी किया जाए परंतु वह क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उसका ख़ून बह रहा होगा और उस का रंग ज़ाफ़रान का होगा और उस की ख़ुशबू कस्तूरी की होगी अर्थात कि यह पसंदीदा लोग हैं जो अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर होंगे। उन्हें नहलाने और कफ़नाने की कोई ज़रूरत नहीं है। उन्ही का लिबास उनका कफ़न है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मेरे पिता को एक चादर का कफ़न दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे थे कि उनमें से कौन ज़्यादा क़ुरआन जानने वाला है? जब ये शुहदा दफ़न किए जा रहे थे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि कौन ज़्यादा क़ुरआन जानने वाला है? जब किसी एक की तरफ़ इशारा किया जाता कि यह ज़्यादा क़ुरआन जानने वाला है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि इस को क़ब्र में उसके साथियों से पहले उतारो अर्थात यह क्योंकि क़ुरआन जानता है इसलिए उस को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पहले दफ़नाते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो उहद के दिन सबसे पहले शहीद हुए। उनकी तदफ़ीन के अवसर पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन अम्र और अम्र बिन जमूह को एक ही क़ब्र में दफ़न करो क्योंकि उनके दरमयान इख़लास और मुहब्बत थी।

तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन दोनों को जो दुनिया में आपस में मुहब्बत करने वाले थे एक ही क़ब्र में दफ़न करो। वह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो लाल रंग के थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सिर के अगले हिस्सा पर बाल नहीं थे और क़द ज़्यादा लंबा नहीं था जबकि हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ियल्लाहु अन्हो लंबे क़द वाले थे। उनका क़द ज़्यादा लंबा नहीं था और अम्र बिन जम्वा जो थे वे लंबे क़द वाले थे। इसलिए दोनों पहचान लिए गए और दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न कर दिया गया।

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 424 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ग़ज़व-ए--उहद के दिन मेरे वालिद को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास इस हालत में लाया गया कि आपका मुसला किया गया था अर्थात जिस्म के अंग काटे गए थे विशेषतः कान और नाक। आपकी नाश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने रखी गई। कहते हैं कि मैं उनके चेहरे पर से कपड़ा उठाने लगा तो लोगों ने मुझे मना कर दिया। फिर लोगों ने एक औरत के चीख़ने की आवाज़ सुनी तो किसी ने कहा कि यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी हैं। उनका नाम हज़रत फ़ातिमा बिंत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हा था यह भी कहा जाता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन थीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मत रो क्योंकि फ़रिश्ते नियमित इस पर अपने परों से साया किए हुए है (अल् इस्तेआब, भाग 3 पृष्ठ 954- 955 दारुल जलील बेरूत) वह तो जन्नत में गया है ख़ुश-क़िस्मत है इस पर रोने की ज़रूरत नहीं।

एक और रिवायत में है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मेरे वालिद को जब उहद के रोज़ लाया गया तो मेरी फूफी भी उन पर रोने लगें तो मैं भी रोने लगा। लोग मुझे मना करने लगे परंतु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे मना नहीं फ़रमाया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोग इस पर रोया न करो, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अल्लाह की क़सम फ़रिश्ते इस पर नियमित अपने परों से साया किए हुए थे यहां तक कि तुमने उसे दफ़न कर दिया

(अल् इस्तेआब, भाग 3 , पृष्ठ 956 दारुल जलील बेरूत)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः बक़रा की एक आयत की तशरीह करते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "जो मुस्लमान शहीद हो गए हैं तुम उन्हें मुर्दा मत कहो। वह ख़ुदा तआला के ज़िंदा सिपाही हैं और ख़ुदा तआला उनका ज़रूर बदला लेगा।' आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "इसलिए अगर एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो मारा गया तो उसके मुक़ाबला पर मुशरिकों के पाँच पाँच आदमी मारे गए और हर जंग में कुफ़्फ़ार मुस्लमानों के मुक़ाबला में बहुत ज़्यादा हलाक हुए सिवाए जंग-ए-उहद के कि इस में बहुत से मुस्लमान मारे गए थे परंतु उनका बदला भी अल्लाह तआला ने दूसरी जंगों में ले लिया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 2, पृष्ठ 288 ऐडीशन 2004 ई.)

जंग-ए-उहद के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कमज़ोरी की वजह से बैठ के नमाज़ अद की और नमाज़ जो अदा की वह ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बैठ कर ही नमाज़ पढ़ी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चूंकि बैठ कर नमाज़ पढ़ा रहे थे तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बैठ के नमाज़ पढ़ी। पीछे खड़े नहीं हुए। लिखने वाले लिखते हैं कि शायद यह नमाज़ दुश्मन के वापिस चले जाने के बाद पढ़ी गई। जहां तक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के भी बैठ कर नमाज़ पढ़ने का ताल्लुक़ है तो उन्हों ने ऐसा इसलिए किया ताकि ईमाम और मुक़तदी की नमाज़ों में यकसानियत रहे। इसके बाद यह आदेश खंडित हो गया अर्थात ज़रूरी नहीं। मुक़तदी खड़े हो के नमाज़ भी पढ़ सकते हैं। यह भी वर्णन किया जाता है लिखने वाले का अंदाज़ा है कि या यह सूरत होगी जिन लोगों ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी वह भी ज़ख़मी ही होंगे और चूँकि अक्स-रियत ज़ख़मी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की थी जिन्हों ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी इसलिए यह शब्द प्रयोग किए गए कि मुस्लमानों ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी अर्थात उनमें खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने वाले भी थे परंतु केवल वे लोग थे जो ज़ख़मी नहीं थे और ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी। अधिकतर घायलों की थी। इसलिए अधिकतर का लिहाज़ करते हुए सब मुक़तदियों के बारे में ही कह दिया गया है कि मुक़तदियों ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी है। सीरत हल्बिया का यह हवाला है।

(अल् हलबिया, भाग 2 , पृष्ठ 324 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) (सीरतुल हल् बिया अनुवादक, भाग दो, पृष्ठ 185 दारुल ईशात कराची)

उहद में शहीद होने वालों की संख्या के बारे में यह वर्णन है जहां तक ग़ज़व-ए--उहद में मुस्लमान शुहदा की संख्या का संबंध है तो अक्सर उल्मा का कथन यह है कि इस दिन के अमस्त मक़्तूलीन की संख्या 70 थी जिनमें से चार मुहाजेरीन में से थे जिनके नाम यह हैं हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुसअब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत शम्मास बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो। एक कथन यह है कि शुहदाए उहद की कुल संख्या अस्सी थी जिनमें से चोहत्तर अंसार में से थे और छः मुहाजेरीन में से। अल्लामा इब्न-ए-हिज्र अस्कलानी रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अगर छः मुहाजिर शहीद थे तो शायद पांचवें हातिब बिन अबी बल्ता रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुलाम साअद और छटे सक़ीफ़ बिन अम्र थे जो बनू अबद शमस के हलीफ़ थे।

एक किताब है ओयूनुल् असरार इस में शुहदा की कुल संख्या छयानवे बताई गई है। मुशरेकीन में से मरने वालों की कुल संख्या तेईस थी। एक कथन यह है कि मुशरे-कीन की यह संख्या बाईस थी। एक रिवायत यह भी है कि इस जंग में तन्हा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इकत्तीस मुशरिकों को क़तल किया था। (सीरतुल हलबिया, भाग 2, पृष्ठ 346-347 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(ओयूनुल असर, भाग दोम, पृष्ठ 47 प्रकाशन दार इब्ने कसीर बेरूत)

यह रिवायत सही नहीं लगती क्योंकि उन के मरने वालों की कुल संख्या ही तेईस थी। एक सीरत निगार शुहदाए उहद की संख्या के बारे में लिखता है कि ग़ज़व-ए-उहद में कुफ़्फ़ार के हाथों शरफ़-ए-शहादत से हमकनार होने वाले सहाबा किराम रज़िय-ल्लाहु अन्हो की संख्या के मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। तारीख़ दानों, सीरत निगारों और मुहद्दिसीन किराम के हाँ शुहदाए उहद की संख्या के बारे में उनचास से लेकर एक सौ आठ तक के कथन हैं लेकिन अक्सर यही है कि उहद के दिन सत्तर सहाबा शहीद हुए थे।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7, पृष्ठ 39-40)

ग़ज़व-ए-उहद के शुहदा की नमाज़ जनाज़ा और तदफ़ीन का वर्णन भी मिलता है। ग़ज़वा उहद के शुहदा की नमाज़ जनाज़ा के बारे में मुख़्तलिफ़ आरा हैं। सही बुख़ारी की रिवायत में है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो यह वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़वा उहद के शुहदा में से दो दो आदमियों को एक ही कपड़े में इकट्ठा रखते और फिर पूछते कि उनमें से कौन क़ुरआन ज़्यादा जानता था। फिर जब उनमें से किसी एक की तरफ़ इशारा किया जाता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसको लहद में पहले रखते थे। अगर एक ही कपड़े में थे तब भी दाएं बाएं रख देते होंगे। पहले उसको दफ़नाया जाता फिर दूसरे को साथ ही। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि मैं क़ियामत के दिन उन लोगों का गवाह हूँ और उनके ख़ूनों में ही दफ़न करने का हुक्म देते थे। न उनको नहलाया

गया और न ही उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई।

(सही बुख़ारी, किताब अल्जनायज़, बाब الصلاۃ علی الشھید, हदीस 1343)

सही बुख़ारी की एक दूसरी रिवायत भी है। हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा उहद के शुहदा का जनाज़ा पढ़ा।

बुख़ारी की एक दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुहदाए उहद का जनाज़ा ग़ज़वा उहद के आठ वर्ष बाद पढ़ा था।

(सही बुख़ारी, किताब अल्जनायज़, बाब الصلاۃ علی الشھید، हदीस 1344)

(सही बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा उहद, हदीस 4042)

यहां मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं। मुख़्तलिफ़ वक़्तों में जो बातें सामने आईं रावियों ने पेश कीं वह पेश की गई हैं लेकिन यही लगता है कि इस वक़्त जनाज़ा नहीं पढ़ा गया बाद में किसी वक़्त पढ़ा गया।

सुन्न इब्ने माजा में वर्णन है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ग़ज़व-ए-उहद के शुहदा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया जाता और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस-दस शुहदा का जनाज़ा पढ़ते और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही मौजूद रही जबकि बाक़ी शुहदा को ले जाया जाता।

(सुंन इब्ने माजा, किताब अल्जनायज़, बाब मा जाआ फ़ी الصلاۃ باب ما جاء فی الصلاۃ علی الشھداء ... हदीस 1513)

हो सकता है इस में भी उनको ग़लतफ़हमी लगी हो। सुंन अबू दाऊद में वर्णन है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ग़ज़वा उहद के शुहदा को ग़ुसल नहीं दिया गया और उनको उनके ख़ून अर्थात ज़ख़्मों समेत दफ़नाया गया और उनमें से किसी की भी नमाज़ जनाज़ा नहीं अदा की गई। (सुंन अबू दाऊद, किताब अल् जनायज़, बाब फ़ील् शहीद हदीस 3135)

सुंन अबी दाऊद ही की एक रिवायत में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिवाए हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के और किसी शहीद का जनाज़ा नहीं पढ़ा।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अल्जनायज़, बाब फिल् शहीद हदीस नंबर 3137)

सुंन तिरमेज़ी की रिवायत में है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा उहद के शुहदा का जनाज़ा नहीं पढ़ा। (सुंन तिरमिज़ी, किताब अल् जनायज़, बाब मा जा आ फ़ी कतले उहदवर्णन हमजा, हदीस 1016)

अधिकतर यही है कि नहीं पढ़ा गया। सीरत इब्ने हशशाम और सीरत हल्बिया में लिखा है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शुहदा का जनाज़ा इस तरह अदा किया कि सबसे पहले हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ जनाज़ा अदा की गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ जनाज़ा में सात तकबीरात कहीं। सीरत हल्बिया के मुताबिक़ चार तक्बीरें कहीं। इसके बाद बाक़ी शुहदा को एक एक कर के लाया जाता और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की मय्यत के साथ रखा जाता और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन दोनों की नमाज़ जनाज़ा अदा फ़रमाते और इस तरह समस्त शुहदा की नमाज़ जनाज़ा एक-बार और हज़रत हमज़ा की नमाज़ जनाज़ा बहत्तर बार और कुछ के नज़दीक बानवे बार अदा की गई।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 395- 396 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 2 , पृष्ठ 337 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) बहरहाल ये रिवायतें तो लिखी गई हैं लेकिन कुछ कमज़ोर रिवायतें भी हैं।

सीरत की एक किताब दलायलुल नब्वा में लिखा है कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की मय्यत के पास नौ शुहदा को इकट्ठा लाया जाता और उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा की जाती फिर इन नौ को ले जाया जाता और मज़ीद नौ शुहदा को लाया जाता और इस तरह इन समस्त शुहदा की नमाज़ जनाज़ा अदा की गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर दफ़ा नमाज़ जनाज़ा में सात तकबीरात कहीं। (दलायल नब्वा, भाग 3, पृष्ठ 287 प्रकाशन दारुल यरार काहिरा 1988 ई.)

सीरत हल्बी्या और دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ में ग़ज़व-ए-उहद के शुहदा की नमाज़ जनाज़ा की अहादीस के बारे में बेहस की गई है और इन दोनों कुतुब में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ओकी रिवायत कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़व-ए--उहद के शुहदा को उनके ख़ूनों के साथ ही दफ़न करने का हुक्म दिया, न उनको नहलाया गया और न ही उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई। इसको ज़्यादा मज़बूत क़रार दिया है।

(अलसीरतुल हल्बिया, भाग 2 , पृष्ठ 338 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) (دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ، भाग 3, पृष्ठ 287- 288 प्रकाशन दारुल अर्यान काहिरा 1988 ई.)

तो आख़िरी नतीजा यही निकला कि जनाज़ा नहीं पढ़ा गया था।

हज़रत इमाम शाफ़ी रहमहुल्लाह वर्णन करते हैं कि नियमित रिवायात से यह बात पुख़्ता तौर पर मालूम होती है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा उहद के शुहदा का जनाज़ा नहीं पढ़ा और जिन रिवायात में वर्णन आया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शुहदा का जनाज़ा पढ़ा और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो पर सत्तर तकबीरात कही थीं यह बात दरुस्त नहीं है और जहां तक हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत का ताल्लुक़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ वर्ष के बाद इन शुहदा का जनाज़ा पढ़ा था तो इस रिवायत में इस बात का वर्णन हुआ है कि यह आठ वर्ष के बाद का वाक़िया है। यह भी लिखा हुआ है कि आठ वर्ष बाद का वाक़िया है। यह उस वक़्त नहीं था।

इमाम बुख़ारी रहमहुल्लाह ने अपनी किताब में بَابُ اَلصَّلٰوۃُ عَلَی الشَّھِیْد अर्थात शहीदों की नमाज़ जनाज़ा के शीर्षक से बाब बाँधा है और उसके नीचे सिर्फ दो हदीसें लाए हैं। पहली हदीस में जो कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है इस में वाज़िह तौर पर वर्णन है कि ग़ज़व-ए-उहद के शुहदा को न ग़ुसल दिया गया और न ही उन पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई जबकि दूसरी हदीस में हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है जिसमें वह वर्णन करते हैं कि أَنَّ النَّبِیَّ خَرَجَ یَوْمًا فَصَلّٰی عَلٰی أَھْلِ أُحُدٍ صَلَاتَہٗ عَلَی الْمَیِّتِ एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले और उहद के शुहदा पर नमाज़ जनाज़ा की तर्ज़ पर नमाज़ पढ़ी और यही हदीस बुख़ारी में ही दूसरी जगह ग़ज़व-ए-उहद के बाब में भी आई है। वहां यही सहाबी रिवायत करते हैं और वर्णनकरते हैं कि صَلّٰی رَسُوْلُ اللّٰہِ عَلٰی قَتْلٰی أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِیْ سِنِیْنَ کَالْمُوَدِّعِ لِلْأَحْیَاءِ وَالْأَمْوَاتِ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के शुहदा पर आठ वर्ष बाद इस तरह नमाज़ पढ़ी जैसे ज़िंदों या वफ़ात पाने वालों को अल्-विदा कहा है।

इसी तरह अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी रहमहुल्लाह कहते हैं कि इमाम शाफ़ी रहमहुल्लाह की इस से यह मुराद है कि किसी की वफ़ात पर लंबी मुद्दत गुज़र जाने के बाद उस की क़ब्र पर जनाज़ा नहीं पढ़ा जाता। इमाम शाफ़ी रहमहुल्लाह के नज़दीक जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल का वक़्त क़रीब है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन शुहदा की क़ब्रों पर जाकर उन्हें अल्-विदा कहते हुए उन के लिए दुआ फ़रमाई और उन के लिए मग़फ़िरत तलब की।

(फ़तह अल् बारी शरह बुख़ारी, भाग 3 पृष्ठ 248-249 किताब अल्जनायज़, प्रकाशन दारुल अलर्यान काहिरा 1986 ई.) (सही अल् बुख़ारी ,किताब अल्मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा उहद, हदीस : 4042)

जमाअत का भी यही मौक़िफ़ है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को लिखा है। जबकि उस वक़्त-ए-नमाज़ जनाज़ा अदा नहीं की गई थी। यह तो वाज़िह है। रिवायतें इसी हक़ में हैं कि नमाज़ जनाज़ा उहद के शुहदा की अदा नहीं की गई थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी यही लिखा है कि नमाज़ जनाज़ा अदा नहीं की गई थी लेकिन बाद में ज़माना वफ़ात के क़रीब, जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का ज़माना क़रीब आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विशेषतः शुहदाए उहद पर जनाज़े की नमाज़ अदा की और बड़े दर्द-ए--दिल से उन के लिए दुआ फ़रमाई।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 502) इस के कुछ और वर्णन भी बाक़ी हैं। यह भी होंगे। इन शा अल्लाह।

दुनिया के जो हालात हैं इसके बारे में भी कुछ कह दूं। जंग की आग तो अब फैलती जा रही है।

इन्सानियत के तबाही से बचने के लिए अब बहुत दुआओं की ज़रूरत है और अहमदी ही अगर हक़ीक़त में सही तरह दुआ करें तो इसके लिए कुछ कर सकते हैं।

इज़राइल हुकूमत है तो वह अपनी ढिटाई पर तुली हुई है। हर बात पर वह अपना कोई न कोई बहाना, उज़्र तलाश करके वर्णन कर देते हैं कि यह वजह हुई इसलिए हम ने यह किया। और किसी बात को, किसी भी अक़ल की बात को मानने को तैयार नहीं। दुनिया की जो बाक़ी ताक़तवर हुकूमतें हैं उनकी मर्ज़ी है या उनको भी इज़राइल का ख़ौफ़ है और वह जो भी इज़राइल वज़ीर-ए-आज़म या उनकी हुकूमत वर्णन देती है यह पहले अपना वर्णन इस बात पर देते हैं कि जंग बंदी होनी चाहिए ज़ुलम बंद होना चाहिए उसके बाद जब वह बयान दे दें तो इस सादिर कर देते हैं।

अल्लाह तआला मुस्लमानों पर भी रहम फ़रमाए और उनको भी ख़ुदा तआला की तरफ़ झुकाए। यही एक रस्ता है जिसकी पनाह में आ के ये लोग अपनी दुनिया-ओ--आक़िबत सँवार सकते हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करे और हमें भी दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम पर भी रहम फ़रमाए।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बावन साला ख़िलाफ़त के दौर का हर दिन इस भविष्यवाणी के पूरा होने की शान का प्रकटन कर रहा है

जहां कहीं मुस्लिम क़ौम की बेहतरी और बहबूदी का मुआमला दरपेश होता आपकी साध्य सुझाव हमारा हौसला बढ़ाने का माध्यम बनतीं। ऐसे अवसर पर आपका अंग अंग क़ौमी दर्द से तड़प उठता था। फ़िर्क़ा बाज़ी का द्वेष मैंने इस वजूद में नाम को नहीं देखा। मिर्ज़ा साहिब बला के ज़हीन थे .. हम दुखी और निराशा की तस्वीर बने उनसे मुलाक़ात के लिए जाते और जब बाहर आते तो यूं मालूम होता कि नाउम्मीदी के बादल छट गए हैं और उद्देश्य में कामयाबी सामने नज़र आ रही है। वज़नी दलील देते और साध्य बात करते और फिर उसी पर बस नहीं हर नौ की क़ुर्बानी और सहयोग की पेशकश भी साथ होती जिससे हम में साहस और हौसला के जज़बात पैदा होते। (मौलाना ग़ुलाम रसूल महर, संपादक इंकलाब)

मैंने आज तक ऐसी उचित गुफ़्तगु और ऐसी मुदल्लिल तक़रीर किसी मुस्लमान के मुँह से नहीं सुनी। मालूम होता है कि तुम्हारा ख़लीफ़ा बहुत बड़ा स्कॉलर है और समस्त धर्मों पर इस की नज़र बड़ी गहरी है। (अमरीकी पादरी)

सियासत में अपनी जमातों को आम मुस्लमानों के पहलू बह पहलू चलाने में आपने जिस उसूल अमल की इबतेदा करके उसको अपनी क़ियादत में कामयाब बनाया है वह भी हर मुंसिफ़ मिज़ाज मुस्लमान और हक़शनास इन्सान से ख़िराज-ए-तहिसीन वसूल करके रहता है (अख़बार सियासत, लाहौर)

"वह वक़्त दूर नहीं जबकि इस्लाम के इस व्यवस्थित फ़िर्क़ा का तर्ज़-ए-अमल स्वाद-ए-आज़म इस्लाम के लिए विशेषता और उन व्यक्तियों के लिए विशेषता जो बिसमिल्लाह के गुम्बदों में बैठ कर ख़िदमात-ए-इस्लाम के बड़े बड़े दावे करने वाले परंतु अंदर से खोखले लोग हैं, मार्गदर्शक साबित होगा। (मौलाना मुहम्मद अली जोहर)

"मेरी राय में मिर्ज़ा साहिब की अलैहदगी कमेटी की मौत केसमान है। संक्षिप्त यह कि हमारे इंतेख़ाब की मौज़ूनियत अब दुनिया पर वाज़िह हो जाएगी। (सय्यद हबीब साहब)

"ऐसी ज्ञान से परिपूर्ण तक़रीर बहुत समय के बाद लाहौर में सुनने में आई है। विशेषता जो क़ुरआन शरीफ़ की आयात से मिर्ज़ा साहिब ने इस्तिं-बात किया है वह तो निहायत ही उम्दा है। मैं अपनी तक़रीर को ज़्यादा देर तक जारी नहीं रख सकता ता मुझे इस तक़रीर से जो आनंद हासिल हो रही है वह नष्ट न हो जाएगी।' (डाक्टर अल्लामा मुहम्मद इक़बाल)

He has a good mind and had carefully thoughtout his constitutional scheme. (Secretary of State for India, Edwin Samuel Montagu)

"बहुत से उल्मा और फ़ुज़ला .. ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को निहायत अमीक़ रिसर्च रखने वाला आलिम और सब धर्मों और उनकी तारीख़--ओ-फ़लसफ़ा का गहरा अध्यन रखने वाला और शरीयत इलाही की हिक्मत-ओ-फ़लसफ़ा की वाक़फ़ीयत रखने वाली व्यक्तित्व पाया।" (अख़बार अल् इमरान दमिशक़)

"اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَةٌ" ..एक ऐसा मज़मून है जो अहमदियों को भी पढ़ लेना चाहिए। उनकी बहुत सारी मालूमात में बढ़ोतरी होगी (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु) की बहुत सी कुतुब की इशाअत अंग्रेज़ी भाषा में भी हो चुकी है। जिनको उर्दू नहीं आती उन्हें इस इल्मी ख़ज़ाना से लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के कुछ पहलूओं के हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात बाबरकात में पूरा होने की पृष्ठभूमि में इंसाफ़ पसंद ग़ैर अज़ जमात मशाहीर और बुद्धिमानों के विचार

पाकिस्तान और यमन के अहमदियों और फ़लस्तीनियों तथा सदसाला जुबली जलसा सालाना घाना के सफ़ल आयोजन के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 फ़रवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के कुछ पहलुओं का वर्णन करूँगा। जैसा कि हर अहमदी जानता है और हर वर्ष इस भविष्यवाणी के पूरा होने पर जलसे भी आयोजित किए जाते हैं। यह 20 फ़रवरी 1886 ई. की भविष्यवाणी है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक मुख़्तलिफ़ सिफ़ात के हामिल बेटे के जन्म की ख़बर दी गई थी लेकिन इस बारे में वर्णन करने से पहले

मैं बच्चों और कुछ नौजवानों को भी इस प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूँ, पहले भी कई दफ़ा दे चुका हूँ जो यह कहते हैं कि जब हम सालगिरा नहीं मनाते तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सालगिरा क्यों मनाई जाती है।

इस बारे में वाज़िह हो जैसा कि मैं ने कहा मैं कई मर्तबा वर्णन कर चुका हूँ कि मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो के जन्म की सालगिरा नहीं मनाई जाती बल्कि भविष्यवाणी के पूरा होने पर जलसे किए जाते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का जन्म तो 12 जनवरी 1889 ई. की है। दूसरे जिन घरों में यह वर्णन नहीं होता वहां ख़ुद वालदैन को पढ़ कर बच्चों को बताना भी चाहिए, समझाना भी चाहिए कि भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद क्या है। यह एक महान भविष्यवाणी है जो पहले नविश्तों के मुताबिक़ जिनकी पहले अम्बिया ने भी ख़बर दी और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद की भविष्यवाणी के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह ऐलान करने का फ़रमाया था।

यह एक लंबी भविष्यवाणी है इस का शुरू के हिस्सा में वर्णन कर देता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

ब-इल्हामेही तआला (بِاِلْهَامِ اللهِ تعالیٰ) व ऐलामेही अज़्ज़ा-व-जल(وَاِعْلَامِهٖ) ख़ुदा-ए-रहीम व क़रीम बुज़ुर्ग व बरतर ने जो हर चीज़ पर कादिर है जल्ला शानोहू व अज्ज़ा इसमोहु(جَلَّ شَانُهٗ وَعَزَّ اسْمُهٗ)(عَزَّوَجَلَّ) मुझ को अपने इल्हाम से सम्बोधित

करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा अतः मैंने तेरी ज़रूरियात को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से बापाया ए कुबलियत जगह दी और तेरे सफ़र को जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है, तेरे लिए मुबारक कर दिया। सो कुदरत और रहमत और कुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और ज़फ़्फ़र की कलीद तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ़्फ़र तुझ पर सलाम ख़ुदा ने यह कहा ता वे जो जिन्दगी के खवाहां हैं मौत के पंजा से निजात पावें और जो कबरों में दबे पड़े हैं बाहर आवें और ता दीन-ए-इसलाम का शरफ़ और कलामुल्लाह का मरतबा लोगों पर ज़ाहिर हो और ता हक अपनी तमाम बरकता के साथ आ जाए और बातिल अपनी तमाम नहूँसतों के साथ भाग जाए।

और ता लोग समझे कि मैं कादिर हूँ जो चाहता हूँ करता हूँ और ता वे यकीन लाएँ कि मैं तेरे साथ हूँ और ता उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर इमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के दीन और उसकी किताब और उसके पाक रसूल मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इंकार और तकज़ीब की निगाह से देखते हैं एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह ज़ाहिर हो जाएं ।

सो तुझे बशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाऐगा एक ज़क्की गुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरी ही तुखम से तेरी ही ज़ुर्रियत व नसल होगा। ख़ूबसूरत पाक लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन-मवाईल और बशीर भी है उसको मुक़द्दस रूह दी गई है और वह रिजस से पाक है वह नूरुल्लाह है। मुबारक वह जो आसमान से आता है उसके साथ फ़ज़्ल है जो उसके आने के साथ आऐगा वह साहिबे शकूह और अज़मत और दोलत होगा।

वह दुनिया में आऐगा और अपने मसीही नफ्स और रुहुल हक की बरकत से बहुतों को बिमारियों से साफ करेगा वह कलामतुल्लाह है क्योंकि ख़ुदा की रहमत व ग़य्यूरी ने उसे अपने कलेमा तमजीद से भेजा है। वह सखत ज़हीनो फ़हीम होगा और दिल का हलीम और उलूमे-ए-ज़ाहिरी वा बातनी से पुर किया जऐगा। और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) दो शंम्बा है मुबारक दो शंम्बा फ़रज़न्द दिलबन्द गिरामी अरज़ुमंद (مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ۔ /مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعَلَاءِ/) मज़हरुल अव्वलि वल आखिरि मज़हरुल हक़्क़ वल अलाए (كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ) का अन्नल्लाहा नज़ा-ला मिनस्समाए। जिसका नज़ूल बहुत मुबारक और जलाले इलाही के ज़हूर का मोजिब होगा। नूर आता है नूर जिसको ख़ुदा ने अपनी रज़ामन्दी के इतर से मम्सूह किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों की रुस्तगारी का मोजिब होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा। और क़ौमें उससे बरकत पाएंगी तब अपने नफ्सी-नुक़्ता आसमान की तरफ उठाया जाऐगा। "वा काना अमरन मकज़िय्या"

(وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا)

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 647)

यह इस लंबी भविष्यवाणी की चंद बातें हैं। और फिर हमने देखा कि इस मुद्दत के अंदर जो अल्लाह तआला से ख़बर पा कर आप ने दी थी वह लड़का पैदा हुआ और भविष्यवाणी के समस्त हिस्सों का मिस्दाक़ बना जिनकी संख्या पच्चास, बावन बनती है। बहरहाल जैसा कि मैं ने कहा मैं ने तो यह दो तीन बातें ही इस भविष्यवाणी की ली हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बावन साला ख़िलाफ़त के दौर का हर दिन इस भविष्यवाणी के पूरा होने की शान का इज़्हार कर रहा है

अब कोई न मानने वाला हमारा मुख़ालिफ़ यह कह सकता है कि अहमदी तो इस भविष्यवाणी के पूरा होने की दलील देंगे ही, वह तो कहते ही रहेंगे कि भविष्यवाणी पूरी हो गई लेकिन कोई ठोस दलील पेश करो। तो यह ऐसे मोतरिज़ाना की ढिटाई है अन्यथा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में जमात अहमदिया की तरक़्क़ी का हर दिन जैसा कि मैं ने कहा उसकी रोशन दलील है। बहरहाल जिन बातों का भविष्यवाणी के हवाले से मैं ने वर्णन किया है इस बारे में ऐसे इंसाफ़ पसंद लोगों की गवाहियाँ पेश करता हूँ जिनका जमात से कोई ताल्लुक़ नहीं है और बर्र-ए-सग़ीर में वह जानी-पहचानी शख़्सियतें हैं।

इसलिए मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब महर एक जानी-पहचानी शख़्सियत हैं। आप अर्थात मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब 1885 ई. में जालंधर में पैदा हुए। एक मुहक़्क़ि-क़, मुसन्निफ़, अदीब, सहाफ़ी और मुर्ख़ थे। रोज़नामा ज़मींदार से जुड़े रहे। बाद में मौलाना अब्दुल मजीद सालिक के साथ मिलकर अख़बार इन्क़िलाब लाहौर से जारी किया। 20 और 25 दिसंबर 1966 ई. को शेख़ अब्दुल माजिद साहिब आफ़ लाहौर मौलाना साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बात चीत के दौरान हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में मौलाना ग़ुलाम रसूल महर साहिब ने बताया कि आप लोगों की किसी किताब में इस महान इन्सान के कारनामों की मुकम्मल आगाही नहीं मिलती। हमने उन्हें क़रीब से देखा है। कई मुलाक़ातें की हैं। प्राईवेट तबादला ख़्यालात किया है। मुस्लिम क़ौम के लिए तो उनका वजूद सरापा क़ुर्बानी था। फिर कहने लगे कि एक दफ़ा मुझे रातों रात कादियान जा कर हज़रत साहिब से मश्वरा करना पड़ा। वह सफ़र अब भी आँखों के सामने है। इन्सानियत के लिए इस शख़्स के दिल में बड़ा दर्द था। अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में बड़ा दर्द था। और जहां कहीं मुस्लिम क़ौम की बेहतरी और बहबूदी का मुआमला दरपेश होता आपकी साध्य सुझाव हमारा हौसला बढ़ाने का माध्यम बनते। ऐसे अवसर पर आपका अंग अंग क़ौमी दर्द से तड़प उठता था। फ़िर्क़ा बाज़ी का द्वेष मैंने इस वजूद में नाम को नहीं देखा। मिर्ज़ा साहिब बला के बुद्धिमान थे।

भविष्यवाणी के शब्द हैं ज़हीन-ओ-फ़हीम होगा। ग़ैर अज़ जमात भी इस की गवाही दे रहा है।

फिर सिलसिला गुफ़्तगु जारी रखते हुए कहने लगे कि मैं ने पाक-ओ-हिंद में सयासी न मज़हबी लीडर ऐसा देखा है जिसका दिमाग़ प्रैक्टीकल पालीटकस में ऐसा काम करता है जैसा मिर्ज़ा साहिब का दिमाग़ काम करता था। बेलौस मश्वरा, वाज़ेह तजवीज़ और फिर सही ख़ुतूत पर लाहे अमल यह उनकी विशेषता थी। मुझे उनकी वफ़ात पर बड़ा सदमा हुआ। कहने लगे मैं ने इस्माईल साहिब पानी पति को ताज़ियत का ख़त भेजा है। इस ख़त में यह भी लिख दिया है कि वह हज़रत साहिब से संबंधित ताज़ियती फ़िक्रात को शाय भी करा सकते हैं।

फिर कहते हैं अफ़सोस मुस्लमानों ने मिर्ज़ा साहिब की क़दर नहीं की। सख़्त मुख़ा-लेफ़त की आंधियों के बावजूद मैं ने मिर्ज़ा साहिब को कभी अफ़्सुर्दा और सर्द-मेहर नहीं देखा। मिर्ज़ा साहिब के दिल की शम्मा हमेशा रोशन रही।

दुख और निराशा की तस्वीर बने उनसे मुलाक़ात के लिए जाते और जब बाहर आते तो यूं मालूम होता कि नाउम्मीदी के बादल छट गए हैं और उद्देश्य में कामयाबी सामने नज़र आ रही है। वज़नी दलील देते और साध्य बात करते और फिर उसी पर बस नहीं हर नौ की क़ुर्बानी और तआवुन की पेशकश भी साथ होती जिससे हम में जुर्रत और हौसला के जज़्बात होते।

(उद्धृत माहनामा ख़ालिद सय्यदना मुस्लेह मौऊद नंबर जून जुलाई 2008 ई. पृष्ठ 325-326)

फिर जनाब लाला कंवर सैन साहिब साबिक़ चीफ़ जज कश्मीर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में उनका एक इज़्हार-ए-ख़याल है। लाला कंवर सैन साहिब लाला भीम सेन साहिब के बेटे थे। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की तक़रीर "अरबी ज़बान का मुक़ाम अल् सिना आलम में" और साहिब सदर के शुक्रिया के बाद विशेषतः शुक्रगुज़ारी के जज़बात से लबरेज़ अंग्रेज़ी में एक प्रभावी तक़रीर फ़रमाई जिसका मफ़हूम यह था, (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक लैक्चर था उस को सुनने के बाद कहा) कि आज क़ाबिल लेक्चरर ने ज़बान-ए--अरबी की फ़ज़ीलत पर जो दिलचस्प और तर्क पूर्ण भाषण दिया है, उसे सुनकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। और इस लिहाज़ से भी मुझे ख़ुशी है कि ज़ाती तौर पर मेरे आपसे ताल्लुक़ात हैं। इसलिए उनके वालिद-ए-माजिद से मेरे वालिद साहिब ने अरबी सीखी थी। लाला साहिब के वालिद ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अरबी सीखी थी। कहते हैं जब मैं लैक्चर सुनने के लिए आया तो उस वक़्त मैं ने ख़्याल किया कि मज़मून इस रंग में वर्णन किया जाएगा जिस तरह पुरानी तर्ज़ के लोग वर्णन करते हैं। कहने लगे प्रसिद्ध है कि किसी अरब से एक दफ़ा ज़बान-ए-अरबी की फ़ज़ीलत की वजह दरयाफ़त की गई तो उसने कहा उस की फ़ज़ीलत की तीन वजह हैं। पहली यह कि मैं अरब का रहने वाला हूँ। यह अरबी की फ़ज़ीलत है। दूसरी यह कि क़ुरआन-ए--क़रीम की भाषा है। चलो यह मानने वाली बात है। तीसरे इसलिए कि जन्नत में भी अरबी बोली जाएगी। कहते हैं कि मैं समझता था कि शायद इस किस्म की बातें ज़बान--ए-अरबी की फ़ज़ीलत में पेश की जाएँगी परंतु जो लैक्चर दिया गया वह निहायत ही आलिमाना और फ़लसफ़ियाना शान अपने अंदर रखता है। मैं जनाब मिर्ज़ा साहिब को यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं ने उनके लैक्चर के एक-एक हर्फ़ को पूरी तवज्जा और कामिल ग़ौर के साथ सुना है और मैं ने इस से बहुत ही आनंद उठाया और फ़ायदा हासिल किया है। मुझे उम्मीद है कि इस लैक्चर का असर मुद्दतों तक मेरे दिल पर क़ायम रहेगा।

(उद्धृत तारीख़ अहमदियत जल्द 6 पृष्ठ 181)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो तो दुनियावी तालीम के लिहाज़ से प्राइम-री पास भी नहीं थे। इस इलम से अल्लाह तआला ने उन्हें पुर किया था जैसा कि

अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था और ग़ैर भी यह तारीफ़ किए बग़ैर नहीं रह सके।

एक अमरीकी पादरी के तास्सुरात सुनें। शेख़ इस्माईल साहिब पानी पति ने वर्णन किया। मौलवी उम्रदीन साहिब शिमलवी ने एक दफ़ा एक वाक़िया सुनाया। कहते हैं कि हुज़ूर के ख़लीफ़ा होने के चंद माह बाद अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो 1914 ई. में ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुए तो चंद माह बाद अमरीका का एक बड़ा पादरी कादियान आया। जो बड़ा आलिम फ़ाज़िल भी था और अपने इलम-ओ-फ़ज़ल पर नाज़ाँ भी था। कादियान पहुंच कर उसने हम लोगों के सामने चंद मज़हबी प्रशं पेश किए जो निहायत वक़ीअ और बड़े अहम थे और साथ ही कहा कि मैं अमरीका से चल के यहां तक आया हूँ और मैं ने मुस्लमानों की हर मजलिस में बैठ कर उन सवालात को दुहराया है परंतु आज तक मुझे मुस्लमानों का बड़े से बड़ा आलम और फ़ाज़िल इन प्रश्नों का तसल्ली बख़श जवाब नहीं दे सका। मैं यहां इन प्रश्नों को आपके ख़लीफ़ा साहिब के सामने पेश करने के लिए विशेषतः आया हूँ। देखिए ख़लीफ़ा साहिब इन प्रश्नों का क्या जवाब देते हैं। यह वर्णन करने वाले कहते हैं कि सवालात इतने पेचीदा और अजीब किस्म के थे कि उन्हें सुनकर मुझे यक़ीन हो गया कि हज़रत साहिब अभी बिल्कुल नौजवान हैं और उलूहियत की कोई बाक़ायदा तालीम भी उन्होंने नहीं पाई। उम्र भी छोटी है और वाक़फ़ीयत भी बहुत थोड़ी है, वह इन प्रश्नों के उत्तर हरगिज़ नहीं दे सकेंगे और इस तरह सिलसिला अहमदिया की बड़ी बदनामी और शर्मिंदगी सारी दुनिया में होगी क्योंकि जब हज़रत साहिब इन प्रश्नों के उत्तर न दे सके तो यह अमरीकन पादरी वापस जा कर सारी दुनिया में इस अमर का प्रापेगंडा करेगा कि अहमदियों का ख़लीफ़ा कुछ भी नहीं जानता और ईसाइयत के मुक़ाबले में हरगिज़ नहीं ठहर सकता। वह सिर्फ़ नाम का ख़लीफ़ा है अन्यथा इलमियत ख़ाक भी नहीं रखता। कहते हैं इस सूरत-ए-हाल से मैं बहुत परेशान हुआ। मैं ने इस बात की कोशिश की कि वह अमरीकन पादरी हज़रत साहिब से न मिले और वैसे ही वापस चला जाए परंतु मुझे इस कोशिश में कामयाबी नहीं हुई। वह अमरीकन इस बात पर डटा रहा कि मैं ज़रूर ख़लीफ़ा साहिब से मिलकर जाऊँगा। न चाहते हुए मैं गया और मैं ने हज़रत साहिब से कहा कि एक अमरीकन पादरी आया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कुछ सवालात पूछना चाहता है। अब क्या करें? इस पर हज़रत साहिब ने बग़ैर देरी के और सोचे फ़रमाया कि बुला लो उसे। न चाहते हुए मैं उसे लेकर आ गया। हज़रत साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। दोनों के मध्य अनुवादक कहते हैं में ही था। वह इंग्लिश में बोल रहा था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उर्दू में जवाब दे रहे थे। यह अनुवाद कर रहे थे। कहते हैं अमरीकन पादरी ने कुछ रस्मी गुफ़्तगु के बाद अपने सवालात हज़रत साहिब की ख़िदमत में पेश किए जिनका अनुवाद मैं ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को सुना दिया। हज़रत साहिब ने निहायत सुकून के साथ इन सब प्रश्नों को सुना और फिर फ़ौरन उनके ऐसे तसल्ली बख़श जवाबात दिए कि मैं सुनकर हैरान हो गया। मुझे हरगिज़ भी यक़ीन न था कि इन प्रश्नों के हज़रत साहिब ऐसे पुरमारफ़ और बेनज़ीर जवाब दे सकेंगे। जब मैं ने यह उत्तर अंग्रेज़ी में अमरीकन पादरी को सुनाए तो वह भी हैरान रह गया और कहने लगा कि मैं ने आज तक ऐसी माक़ूल गुफ़्तगु और ऐसी मुदल्लिल तक़रीर किसी मुस्लमान के मुँह से नहीं सुनी। मालूम होता है कि तुम्हारा ख़लीफ़ा बहुत बड़ा स्कॉलर है और समस्त धर्मों पर इस की नज़र बड़ी गहरी है। यह कह कर उसने बड़े अदब से हज़रत साहिब के हाथ को बोसा दिया और वापस चला गया।

(उद्धृत तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 163-164)

यह शान है भविष्यवाणी के पूरे होने की। एक पादरी भी जो अपने आपको उलूम का माहिर समझता था इस्लाम की बरतरी का क़ायल हो कर गया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की एक किताब है "नहरू रिपोर्ट और मुस्लमानों के मसाले"। उसके मुताल्लिक़ एक राय देने वाले ने लिखा है कि"हुज़ूर की इस बरवक़्त राहनुमाई से मुस्लमानों के ऊंचे तबक़े बहुत धन्यवादी हुए और मुस्लमानों के सयासी हलक़ों में उसे निहायत पसंद किया गया और बड़े बड़े मुस्लिम लीडरों ने तारीफ़ी अलफ़ाज़ में उसे सराहा और शुक्रिया अदा किया कि हज़रत इमाम जमात अहमदिया ने मुस्लमानों की निहायत ज़रूरत के वक़्त दस्त-गीरी की है। इसलिए कई अस्हाब ने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि "असली और अमली काम तो आपकी जमात ही कर रही है और जो तंज़ीम आपकी जमात में है वह और कहीं नहीं देखी जाती' कलकत्ता के मुख़लिस अहमदी मिस्टर दौलत अहमद ख़ां साहिब बी.ए.एल.एल. बी जवाईंट ऐडीटर अख़बार "सुलतान" ने तबसरा को बंगाली में अनुवाद करके और एक छोटी सी ख़ूबसूरत किताब की शक्ल में तर्तीब देकर शाय किया और अहल बंगाल में इस को बहुत मक़बूलियत हासिल हुई। एक मुअज़्ज़िज़ तालीम याफ़ता ग़ैर अहमदी नहरू रिपोर्ट पर तबसरा का मुताला करने के बाद इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सैक्रेटरी तरक़्क़ी इस्लाम के नाम एक ख़त में लिखा। "मेरी तबीयत बहुत चाहती है कि हज़रत ख़लीफ़ा साहिब को देखूं और उनकी ज़यारत करूँ क्योंकि मेरे दिल में उनका बहुत सम्मान है आप बराए मेहरबानी हज़रत साहिब की ख़िदमत में इस विनीत का सलाम अर्ज़ कर दीजीए और यह भी कह दीजिए कि एक ख़ादिम की तरफ़ से मुबारकबाद मंज़ूर फ़रमाएं कि आप निहायत ख़ुश-उस्लूबी से ऐसे ख़तरनाक हालात में जिनसे इस्लाम उस वक़्त गुज़र रहा है इस को बचा रहे हैं और न सिर्फ मज़हबी ख़बरगीरी कर रहे हैं बल्कि सयासी मुआमलात में भी मुस्लमानों की रहनुमाई फ़र्मा रहे हैं। मैंने जनाब-ए-वाला के ख़्यालात को नहरू रिपोर्ट के मुताल्लिक़ पढ़ा जिसने आपके अस्तित्व को मेरी आँखों में और भी बढ़ा दिया और मैं जहां आपको एक ज़बरदस्त मज़हबी आलिम समझता हूँ उस के साथ ही एक माहिर सियास्तदान भी समझने लगा हूँ।

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 71-72)

अख़बार सियासत लाहौर से प्रकाशित होता था। 2 दिसंबर 1930 ई. में उसने लिखा कि "मज़हबी इख़्तेलाफ़ात की बात छोड़कर देखें तो जनाब बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने प्रकाशन और लेखनी के मैदान में जो काम किया है वह बलिहाज़ ज़ख़ामत-ओ-इफ़ादा हर तारीफ़ का अधिकारी है और सियासत में अपनी जमातों को आम मुस्लमानों के पहलू ब पहलू चलाने में आपने जिस उसूल अमल की इबतेदा करके उसको अपनी क़ियादत में कामयाब बनाया है वह भी हर मुंसिफ़ मिज़ाज मुस्लमान और हक़शनास इन्सान से ख़िराज-ए-तहसीन वसूल करके रहता है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो की सयासी फ़िरासत का एक ज़माना क़ायल है और नहरू रिपोर्ट के ख़िलाफ़ मुस्लमानों को एकत्र करने में साइमन कमीशन के रूबरू मुस्लमानों का नुक्ता निगाह पेश करने में मसायल हाज़रा पर इस्लामी नुक्ता निगाह से मुदल्लिल बेहस करने और मुस्लमानों के हुक़ूक़ के इस्तिदलाल से ममलू किताबें प्रकाशित करने की सूरत में अर्थात दलीलों से भरी हुई किताबें शाय करने की सूरत में "आपने बहुत ही काबिल-ए-तारीफ़ काम किया है। ज़ेर-ए-बहस किताब साइमन रिपोर्ट पर आपकी तन्क़ीद है जो अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है जिसके मुताला से आपकी विसात-ए--मालूमात का अंदाज़ा होता है। आपकी वर्णन शैली सरल और क़ायल कर देने वाला होता है। आपकी ज़बान बहुत नर्म है।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 219)

इराक़ के हालात पर ऑल इंडिया रेडियो-स्टेशन से तकरीर

इराक़ के हालात पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक तक़रीर फ़रमाई जो ऑल इंडिया रेडियो-स्टेशन लाहौर से 25 मई 1941 ई. को प्रसारित हुई। इस के मुताल्लिक़ राय है। इस तक़रीर का मुहर्रिक दूसरी जंग-ए-अज़ीम के दौरान जर्मनी और इटली का इराक़ पर हमला-आवर होना था। दिल्ली के प्रसिद्ध सिख अख़बार रियासत 2 जून 1941ई. ने इस पर निम्नलिखित तबसरा किया

कहता है कि "ग़ुलाम अक़्वाम और ग़ुलाम देशों के कैरेक्टर का सबसे कमज़ोर पहलू यह होता है कि उनके अफ़राद अख़लाक़ी सच्चाई और जुर्रत से वंचित हो जाते हैं और चापलूसी, झूठ, ख़ुशामद और बुज़देली की स्पिरिट उनमें नुमायां हो जाती है।" फिर मिसाल दे रहा है कि "इराक़ का रशीद अली बर्तानवी हुकूमत या बर्तानवी रियाया के नुक्ता निगाह से ग़लती पर हो या उसका बर्तानिया से जंग करना ग़ैर-मुनासिब हो परंतु इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि यह शख़्स अपने देश की सयासी आज़ादी के लिए लड़ रहा है और इस को किसी क़ीमत पर भी अपने देश का ग़द्दार या ट्रेटर क़रार नहीं दिया जा सकता परंतु हमारे ग़ुलाम देश के रियासत के वालियों और लीडरों का कैरेक्टर देखिए जो वालेई रियासत इराक़ के विषय में तक़रीर करता है। रशीद अली को ग़द्दार कह कर पुकार रहा है। और जो लीडर जंग के मुताल्लिक़ वर्णन देता है सबसे पहले वह रशीद अली को ट्रेटर क़रार देता है और फिर अपने वर्णन की बिस-मिल्लाह करता है और उन वालियाँ रियासत और लीडरों का कैरेक्टर अर्थात यह मुस्लमान या हिंदुस्तान समेत कुछ दूसरे भी जो लीडर हैं, इन लीडरों का कैरेक्टर "ग़ुलामी के बायस इस क़दर पस्त है कि यह ग़लत ख़ुशामद और चापलूसी को ही मुल्क या हुकूमत की ख़िदमत समझ रहे हैं। हमारे वालियाँ रियासत और लीडरों की इस अहमक़ाना ख़ुशामद की मौजूदगी में कादियान की अहमदी जमात के पेशवा की अख़लाक़ी जुर्रत आपका बुलंद कैरेक्टर और आपकी साफ़ बयानी दिलचस्पी और मुसर्रत के साथ महसूस की जाएगी जिसका इज़हार आपने पिछले हफ़्ता अपनी रेडीयो की एक तक़रीर में किया।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 8 पृष्ठ 239 से 244) यह क़ौम को असीरी से नजात दिलाने की आप रज़ियल्लाहु अन्हो की एक कोशिश है।

मौलाना मुहम्मद अली जोहर साहिब हैं। 1878 ई. में यह पैधा हुए। 1931 ई. में उनकी वफ़ात हुई। राम पूर में पैदा हुए थे। कलकत्ता से उन्होंने हफ़्ता-वार अख़बार

कामरेड जारी किया। दिल्ली में हमदरद के नाम से उर्दू में भी अख़बार का इजरा किय। 1923 ई. में ऑल इंडिया कांग्रेस के सदर बनाए गए। गोल मेज़ कान्फ्रैंस में शिरकत के लिए लंदन गए। वहीं 4 जनवरी 1931ई. को उनका इंतेक़ाल हो गया।

(उद्धृत मौलाना मुहम्मद अली जोहर (हयात-ओ-ख़िदमात) अज़ डाक्टर नदीम शफ़ीक़ मलिक पृष्ठ 15 , 30 से 33, 41 से 45 48)

पाकिस्तान के क़ियाम, इस्तिहकाम और इसकी तामीर-ओ-तरक़्क़ी के हर मरहले पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमात नुमायां थीं। आज यह कहते हैं नाँ कि अहमदियों ने क्याकिया? यह तो ख़ुद ग़ैर तस्लीम कर रहे हैं कि नुमायां ख़िदमात थीं। मौलाना मुहम्मद अली जोहर साहिब ने इस सिलसिला में अपने तास्सुरात अपने अख़बार हमदर्द 26 सितंबर 1927 ई. में दर्ज फ़रमाए। लिखते हैं कि "न शुक्रगुज़ारी होगी कि जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद और उनकी इस व्यवस्थित जमाअत का वर्णन इन सुतूर में न करें जिन्हों ने अपनी तमाम-तर प्रथमिकताएं बिना इख़तेलाफ़ अक़ीदा समस्त मुस्लमानों की बहबूदी के लिए वक़्फ़ कर दी हैं। यह हज़रात उस वक़्त अगर एक जानिब मुस्लमानों की सियास्यात में दिलचस्पी ले रहे हैं।" अर्थात मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद और उनकी जमात।"तो दूसरी तरफ़ मुस्लमानों की तंज़ीम, तब्लीग़-ओ-तिजारत में भी इंतेहाई जद्द-ओ-जहद से मुनहमिक हैं।" यह अहमदियों का किरदार है "और वह वक़्त दूर नहीं जबकि इस्लाम के इस व्यवस्थित फ़िर्क़ा का तर्ज़-ए-अमल (सुनें कहते हैं वह वक़्त दूर नहीं जब इस्लाम के इस व्यवस्थित फ़िरक़े का तर्ज़-ए-अमल "स्वाद-ए-आज़म इस्लाम के लिए विशेषता और उन व्यक्तियों के लिए विशेषता जोबिसमिल्लाह के गुम्बदों में बैठ कर ख़िदमात-ए--इस्लाम के बड़े बड़े दावे करने वाले परंतु अंदर से खोखले लोग हैं मार्गदर्शक साबित होगा।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 622)

बड़े-बड़े मिंब्बरों में बैठ के दावे करते हैं। हम मज़हबी लीडर बन के ज़ाहिर में बड़े बुलंद बाँग दावे करते हैं लेकिन कहता है ख़िदमात-ए-इस्लाम के बड़े बड़े दावे करने वाले परंतु अंदर से खोखले लोग हैं । लेकिन अंदरूनी तौर पर यह केवल उनके दावे हैं। बड़े घटिया किस्म के दावे हैं। उनके लिए ये लोग मिशअल-ए-राह साबित होंगे। यह दिन किसी वक़्त आएगा देख लेना। यह है इंसाफ़ पसंद उल्मा की राय। आजकल के उल्मा जो अहमदियों को पाकिस्तान और इस्लाम का दुश्मन कहते हैं उन्हें इस आईने में अपना चेहरा देखना चाहिए कि इस्लाम का दर्द अहमदी रखते हैं या यह तथाकथित उल्मा।

सय्यद हबीब साहिब एक शख़्सियत हैं। 1891 ई. में पैदा हुए। उर्दू के प्रसिद्ध और मुमताज़ अख़बार नवीस थे। रिसाला फूल और तहज़ीब निसवां के मुदीर निर्धारित हुए। अख़बार नक़्क़ाश और फिर "सियासत' और रोज़नामा "ग़ाज़ी' जारी किया। निहायत बे-बाक और निडर अख़बार नवीस थे। 1951 ई. में उनकी वफ़ात हुई।

(उद्धृत याराँने कुहन अज़ अब्दुल मजीद सालिक पृष्ठ 189 से 200 ज़ेर "सय्यद हबीब")

ऑल इंडिया कश्मीर कमेटी जिसका क़ियाम 25 जुलाई 1931 ई. को अमल में आया था। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस कमेटी की सदारत से अस्तीफ़ा दे दिया। शुरू में जब कमेटी बनी थी तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को सब मुस्लमानों की तरफ़ से मुत्तफ़िक़ा तौर पर सदर बनाया गया था। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक वक़्त में आके उसकी सदारत से अस्तीफ़ा दे दिया तो सय्यद हबीब साहिब ने अपने अख़बार सियासत लाहौर इशाअत 18 मई 1933 ई. में लिखा "मेरी दानिस्त में अपनी आला क़ाबिलीयत के बावजूद डाक्टर इक़बाल" अर्थात डाक्टर अल्लामा इक़बाल साहिब "और मलिक बरकत अली साहिब दोनों इस काम को चला नहीं सकेंगे और यूं दुनिया पर स्पष्ट हो जाएगा कि जिस ज़माना में कश्मीर की हालत नाज़ुक थी उस ज़माना में जिन लोगों ने इख़तेलाफ़-ए--अक़ाइद के बावजूद मिर्ज़ा साहिब को सदर मुंतख़ब किया था उन्होंने काम की कामयाबी को ज़ेरे निगाह रखकर बेहतरीन इंतेख़ाब किया था। उस वक़्त अगर इख़तेलाफ़ात-ए-अक़ाइद की वजह से मिर्ज़ा साहिब को मुंतख़ब न किया जाता तो यह तहरीक बिल्कुल नाकाम रहती और उम्मते मरहूमा को सख़्त नुक़्सान पहुंचता।

मेरी राय में मिर्ज़ा साहिब की अलैहदगी कमेटी की मौत के मुतरादिफ़ है। संक्षिप्त यह कि हमारे इंतेख़ाब की मौज़ूनियत अब दुनिया पर वाज़िह हो जाएगी।

(माहनामा ख़ालिद सय्यदना मुस्लेह मौऊद नंबर जून जुलाई 2008 ई. पृष्ठ 323-324)

अब पता लग जाएगा कि मिर्ज़ा साहिब ने क्या काम किया था और डाक्टर अल्लामा साहिब क्या काम करते हैं और उनकी कमेटी जो उनके बग़ैर है क्या काम करती है। और फिर दुनिया ने देख लिया कि क्या हुआ। सब कुछ सामने है। यह काम आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क्यों किया? इसलिए कि असीरों की रुसतगारी का दर्द आप रज़ियल्लाहु अन्हो में था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस का माध्यम बनना था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सदारत तो छोड़ दी थी और बाद में भी कमेटी का काफ़ी काम किया लेकिन इस दर्द की वजह से पीछे रह कर हर मुम्किन मदद जो आप कर सकते थे की और इस की तारीख़ गवाह है।

फिर मौलाना अब्दुल माजिद आबादी साहब हैं। 1892 ई. में यह पैदा हुए। हिंदुस्तान के एक उर्दू अदीब, क़लमकार, मुहक़्क़िक़ और मुफ़स्सिर-ए-क़ुरआन भी थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के विसाल पर मौलाना अब्दुल माजिद साहिब ने अपने अख़बार सिदक़-ए-जदीद की 18 नवंबर 1965 ई. की इशाअत में लिखा कि दूसरे अक़ीदे उनके जैसे भी हूँ, क़ुरआन-ओ-उलूम-ए-करानी की आलमगीर इशाअत और इस की आफ़ाक़-ओ-गीर तब्लीग़ में जो कोशिशें उन्होंने सरगर्मी और से अपनी तवील उम्र में जारी रखी उनका सिला अल्लाह तआला उन्हें अता फ़रमाए। यह ख़ुद मुफ़स्सिर-ए-क़ुरआन हैं और यह बात मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में वर्णन फ़र्मा रहे हैं। और उन ख़िदमात के तुफ़ैल में उनके साथ आम मुआमला दरगुज़र का फ़रमाए। ख़ैर आगे लिखते हैं कि इलमी हैसियत से क़ुरआन हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ की जो तशरीह और अनुवाद वह कर गए हैं इस का भी एक बुलंद-ओ-मुमताज़ स्थान है।

(उद्धृत माहनामा अंसारुल्लाह हज़रत मुस्लेह मौऊद नंबर मई, जून, जुलाई 2009 ई. पृष्ठ 879)

एक मुफ़स्सिर-ए- क़ुरआन जो मुस्लमानों के हैं ख़ुद यह तस्लीम कर रहे हैं कि इलमी हैसियत से क़ुरआन के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ की जो तशरीह और तरतीब और अनुवाद वह कर गए हैं इस का भी एक बुलंद-ओ-मुमताज़ मर्तबा है। इख़तेलाफ़-ए-अक़ीदा के बावजूद जिस में वह अपने आपको हक़ पर समझते होंगे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत-ए-क़ुरआन-ओ-इस्लाम की तारीफ़ किए बग़ैर नहीं रह सके।

जब अल्लाह तआला ने उलूम-ए-ज़ाहिरी-ओ-बातिनी से परिपूर्ण करने का वादा दिया था तो फिर कौन आप रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे उलूम-ओ-मआरिफ़ अपने वक़्त में बता सकता था बल्कि बाद में आने वाले भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो के उलूम से ही लाभ प्राप्त करेंगे तभी सही रस्ते पर चलते जाएंगे।

डाक्टर अल्लामा मुहम्मद इक़बाल साहिब उनके हवाले से जमाअत के ख़िलाफ़ बहुत बातें होती हैं लेकिन उनकी ये बातें भी रिकार्ड में मौजूद हैं। 24 मार्च 1927 ई. को लाहौर में एक जलसा हुआ जिसकी सदारत अल्लामा इक़बाल ने की। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां तक़रीर फ़रमाई। इस के बाद अल्लामा साहिब ने कहा: "ऐसी प्रभावी ज्ञान से परिपूर्ण तक़रीर बहुत अर्से के बाद लाहौर में सुनने में आई है। विशेषता जो क़ुरआन शरीफ़ की आयात से मिर्ज़ा साहिब ने इस्तिंबात किया है वह तो निहायत ही उम्दा है। मैं अपनी तक़रीर को ज़्यादा देर तक जारी नहीं रख सकता ता मुझे इस तक़रीर से जो लज़्ज़त हासिल हुई है" अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तक़रीर से जो लज़्ज़त हासिल हो रही है "वह ज़ायल न हो जाए।"

(अल्फ़ज़ल 15 फ़रवरी 1999 ई. पृष्ठ 6)

सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब एम.ए तारीख़ के प्रोफ़ैसर थे। प्रिंसिपल इस्लामिया कॉलेज लाहौर थे। 1919 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने "इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़" पर लाहौर में एक लैक्चर दिया था। बड़ा प्रभावी लैक्चर था। यह सदारत कर रहे थे। सदारती ख़िताब में सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब ने वर्णन किया कि फ़ाज़िल बाप के फ़ाज़िल बेटे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद का नाम-ए-नामी इस बात की काफ़ी ज़मानत है कि यह तक़रीर निहायत आलिमाना है। मुझे भी इस्लामी तारीख़ से कोई जानकारी है और मैं दावा से कह सकता हूँ कि क्या मुस्लमान और क्या ग़ैर मुस्लमान बहुत थोड़े इतिहासकार हैं जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द के इख़तेलाफ़ात की गहराई तक पहुंच सके और इस भयानक और पहली ख़ाना-जंगी के फ़ित्ना के अस्बाब समझने में कामयाब हुए हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब को न सिर्फ ख़ाना-जंगी के फ़ित्ना के कारण समझने में कामयाबी हुई है बल्कि उन्होंने निहायत वाज़िह और नियमित पैराए में इन वाक़ियात को वर्णन फ़रमाया है जिनकी वजह से ऐवान-ए-ख़िलाफ़त मुद्दत तक तज़लज़ुल में रहा। मेरा ख़्याल है ऐसा मुदल्लिल मज़मून इस्लामी तारीख़ से दिलचस्पी रखने वाले अहबाब की नज़र से पहले नहीं गुज़रा होगा।

(उद्धृत अल् फ़ज़ल 15 फ़रवरी 2002 पृष्ठ 13)

वज़ीर हिंद एडविन समोयल मोंटेगो (Edwin Samuel Montagu)

हिंदुस्तान के तमाम मुआमलात के ज़िम्मेदार बर्तानवी पार्लीमान में सैक्रेटरी आफ़ स्टेट बराए इंडिया होते थे। जब यह इंडो पाकिस्तान या सब कांटेंन्ट (Subcontinent) ब्रिटिश गर्वनमैंट के अधीन था, बर्तानिया की गर्वनमैंट के अधीन था तो यह उस वक़्त हिंदुस्तान के जो मुआमलात थे इस में बर्तानवी पार्लीमैंट में सैक्रेटरी आफ़ स्टेट बराए इंडिया थे। 1917 ई. और 1918 ई. में यह इस ओहदे पर फ़ायज़ थे। इन्ही दिनों में हिंदुस्तान की सूरत-ए-हाल का जायज़ा लेने हिंदुस्तान के दौरे पर गए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर हिंदुस्तान के मुआमलात को सुलझाने पर वाज़ेह और मुफ़स्सिल राहनुमाई इन साहिब अर्थात वज़ीर हिंद के नाम एक ऐडरैस की शक्ल में इरसाल फ़रमाई। यह वज़ीर-ए-हिंद भी थे। यह ऐडरैस उन्हें लाहौर में पेश किया गया जिसे हज़रत सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने पढ़ कर सुनाया। हुज़ूर ने ख़ुद भी वज़ीर साहिब से मुलाक़ात की और राहनुमाई से नवाज़ा। मोंटेगो (Montagu) साहिब ने इस ऐडरैस और इसका अहवाल अपनी डायरी में नोट किया जो उनकी वफ़ात के बाद An Indian Diary के नाम से शाय हुई। उन्होंने 15 नवंबर 1917 ई. की तारीख़ में दर्ज किया चौथा वफ़द अहमदियों का था जो मुस्लमानों का ही एक फ़िर्क़ा है। ये मुस्लमान हैं और इन्सानियत के इत्तिहाद में यक़ीन रखते हैं और समस्त अम्बिया पर ईमान लाते हैं। उन्होंने एक लंबी दस्तावेज़ पढ़ कर सुनाई जो उनके हुज़ूर ने लिखी की है। ये दस्तावेज़ उन समस्त दस्तावेज़ात से कहीं बेहतर थी जो हमारे सामने पेश की गईं। इस दस्तावेज़ की सुझाव ऐगज़ैक्टिव कौंसल के मैंबरान के चुनाव से मुताल्लिक़ और क़ानूनसाज़ी के मुताल्लिक़ सब वफ़ूद से बेहतर और बहुत ग़ौर-ओ-फ़िक्र के बाद निहायत ज़हानत से तैयार किए गए हैं।

उनके इख़तेतामी नोट के असल अलफ़ाज़ यूं हैं कि :

He has a good mind and had carefully thought out his constitutional scheme.

(उद्धृत अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 से 27 फ़रवरी 2020 ई. पृष्ठ 54 ख़ुसूसी इशाअत बर्मो का यौम मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

उनका दिमाग़ पाए का है और बड़ी एहतियात और गहराई से उन्होंने एक आईनी स्कीम दी है।

यह एक पढ़ा लिखा मंझा हुआ सियास्तदान है जो एक दुनियावी तालीम न हासिल करने वाले के बारे में कह रहा है। यह क्यों न हो कि यह भविष्यवाणी है कि अल्लाह तआला ने उसे ज़ाहिरी उलूम से भी परिपूर्ण किया है।

चौधरी मुहम्मद अकबर ख़ान भट्टी साहिब ऐडवोकेट हाईकोर्ट हैं। कहते हैं "एक वाक़िया का वर्णन करना भी शायद बेमहल नहीं होगा। एक हफ़्ता-वार रिसाला था "पार्स", उस के ऐडीटर "लाला करम चंद एक दफ़ा अख़बार नवेसों के वफ़द के साथ कादियान के सालाना इजलास में शामिल हुए। वहां से वापस आए तो एक के बाद एक कई मज़ामीन में मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद साहिब की क़ियादत, फ़िरासत और शख़्सियत का वर्णन ऐसे पैराए में किया कि मुख़ालिफ़ों में खलबली मच गई। मुझे ख़ुद कहने लगे। हम तो ज़फ़रुल्लाह को बड़ा आदमी समझते थे। (सर ज़फ़रुल्लाह इन दिनों में वायसराए के ऐगज़ैक्टिव कौंसल के मेम्बर थे) परंतु मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब के सामने उसकी हैसियत' अर्थात ज़फ़र उल्लाह ख़ान साहब की हैसियत "छोटे बच्चे की है। वह हर मुआमले मैं उनसे बेहतर राय रखता है" अर्थात हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो हर मुआमले में ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से बेहतर राय रखते हैं "और बेहतरीन दलायल पेश करता है। इस में बेपनाह तंज़ीमी क़ाबिलियत है। ऐसा आदमी बाआसानी किसी रियासत को बाम--ए-उरूज तक ले जा सकता है .. तक़सीम-ए-मुल्क के बाद मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने ला कॉलेज लाहौर में मुल्की तरक़्क़ी के इमकानात पर चंद तक़रीरें की थीं। इन तक़रीरों में उन्होंने एक फ़ाज़िल यूनीवर्सिटी लैक्चरार की तरह नक़शाजात, ब्लैक बोर्ड और ग्राफ़ की इमदाद से कुछ नुकात की वज़ाहत की थी। मुझे एक नुक्ता याद है।" यह लिखने वाले कहते हैं "मुझे एक नुक्ता याद है और वह यह कि' उन्होंने कहा कि "अफ़सोस है कि तक़सीम-ए-मुल्क से पहले इन जज़ायर की तरफ़ तवज्जा नहीं दी गई जो साहिल हिंद के साथ-साथ वाक़्य हैं। लुका दीप और सरनदीप, बाला दीप इत्यादि। इन साहिली जज़ीरों की आबादी अक्सर-ओ-बेशतर मुस्लमानों पर आधारित है और उनकी एहमियत दिफ़ाई नुक्ता निगाह से बहुत ज़्यादा है। इर्शादात सुनकर पाठकों में आम तास्सुर यह पाया जाता था कि काश तक़सीम की कार्रवाई के वक़्त ख़लीफ़ा साहिब का इशतेराक-ए-अमल हासिल कर लिया जाता। बेजा द्वेष और ख़ुद-फ़रेबी ने क़ौमी सतह पर मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की ख़ुदादाद सलाहियतों से फ़ायदा उठाने का अवसर हाथ से खो दिया एक जज ने निजी सोहबत में एतराफ़ किया कि उन्हें अपनी सारी फ़ज़ीलत के बावजूद इन माफ़ौकुल-फ़ितरत मसायल के विषय में ज़रा सी भी वाक़फ़ीयत प्राप्त नहीं थी। मिर्ज़ा महमूद अहमद की तोजीहात को सुनकर उनके चौदह वर्ग रोशन हो गए और पहली बार इस्लामी नज़रियात का सही सही इलम हुआ।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 16 से 22 फ़रवरी 2018 पृष्ठ 3)

अतः मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ही हैं जिन्हों ने पहले भी और बाद में भी पाकिस्तान के वजूद के क़ियाम के लिए आला तरीन राय पेश कीं और पढ़े लिखे लोगों के भी दिमाग़ रोशन कर दिए। होश-ओ-हवास उनको भूल गए। उनको यह भूल ही गया और वह अपने आपको बिल्कुल ही स्कूल का बच्चा समझने लगे कि हमें तो इन बातों का पता ही नहीं था।

अख़बार अल् ईमरान दमिशक़ जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां दौरा किया तो 10 अगस्त 1924 ई. में शीर्षक 'महदी दमिशक़ में लिखता है कि "अभी आपके दारुल खिलाफ़ा में तशरीफ़ लाने की ख़बर प्रकाशित हुई थी कि बहुत से उल्मा और फ़ुज़ला जो वहां शाम के थे "आपके साथ गुफ़्तगु करने और आपकी दावत के मुताल्लिक़ आपसे मुनाज़रा-ओ-मुबाहिसा करने के लिए आपकी ख़िदमत में गए" और फिर क्या हुआ, कहता है लिखने वाला "और उन्होंने आपको निहायत अमीक़ रिसर्च रखने वाला आलम और सब मज़ाहिब और उनकी तारीख़-ओ-फ़लसफ़ा का गहरा अध्यन रखने वाला और शरियत-ए-इलाही के हिक्मत-ओ-फ़लसफ़ा की वाक़फ़ीयत रखने वाली शख़्सियत पाया।" (रोज़नामा अल्फ़ज़ल 17 फ़रवरी 1972 ई. पृष्ठ 10) यह एक अरब अख़बार की गवाही है।

इज़राइल के क़ियाम की मंसूबा बंदी और फिर क़ियाम पर जब मंसूबा बंदी हो रही थी और फिर उसके क़ियाम के बाद भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज़हबी और तारीख़ी तनाज़ुर में मुस्लमानों को हक़ायक़ बता कर होशियार करने की कोशिश की। बाद में भी करते रहे। इस विषय में आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक मज़मून "اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَةٌ" लिखा। और इस का अरबी अनुवाद करके उसे अरब तक भी फैलाया गया और अरबों को और मुस्लिम दुनिया को कहा कि अब भी होशयार हो जाओ। इस मज़मून को कई अरब अख़बारात ने भी वर्णन किया और सराहा भी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने तहफ़्फ़ुज़ात का इज़हार किया था, ख़दशात का वर्णन किया था और जिन नतायज के पैदा होने का इज़हार किया था आज वही नतायज हम देख रहे हैं। और आज जंग में नज़र आ रहे हैं जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किए थे। काश कि मुस्लमान उस वक़्त भी तवज्जा करते और आज भी तवज्जा करें।

इस बारे में अल् शोरा बग़दाद का एक अख़बार है उसने 18 जून 1948 ई. के पर्चे में तफ़सील लिखी। इसी तरह अख़बार "अलिफ़ ब" दमिशक़ शाय होता है उसने भी इस मज़मून को ख़ूब सराहा।

यह एक ऐसा मज़मून है जो अहमदियों को भी पढ़ लेना चाहिए, उनकी बहुत सारी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा।

(उद्धृत तारीख़-ए-अहमदियत भाग 12 पृष्ठ 393,391)

सरदार शौकत हयात ख़ान साहब यह जिद्दो जहद आज़ाद हिंदुस्तान के प्रभावी मेम्बर थे। अपनी किताब गुम क़ौम The Nation that lost its soul में लिखा है : एक दिन मुझे क़ायद-ए-आज़म की तरफ़ से संदेश मिला। (क़ायद-ए-आज़म का पैग़ाम यह था)कि शौकत मुझे मालूम हुआ है कि तुम बटाले जा रहे हो जो कादियान से पाँच मील के फ़ासले पर है। तुम वहां जाओ और हज़रत साहिब को मेरी दरख़ास्त पहुँचाओ कि वह पाकिस्तान के हुसूल के लिए अपनी नेक दुआओं और हिमायत से नवाज़ें। कहते हैं जलसा के इख़तेताम के बाद में आधी रात के क़रीब बारह बजे रात कादियान पहुंचा। हज़रत साहिब आराम फ़र्मा रहे थे। मैं ने उन तक पैग़ाम पहुंचाया कि मैं क़ायद-ए-आज़म का पैग़ाम लेकर हाज़िर हुआ हूँ। वह उसी वक़्त नीचे तशरीफ़ ले आए और इस्तिफ़सार किया कि क़ायद-ए-आज़म के क्या अहकामात हैं? मैं ने कहा कि वह आपकी दुआ और सहयोग के तलबगार हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर में कहा कि वह शुरू ही से उनके मिशन के लिए दुआ-गो हैं और जहां तक उनके पैरोकार का ताल्लुक़ है अर्थात अहमदियों का। कोई अहमदी मुस्लिम लीग के ख़िलाफ़ इंतेख़ाब में खड़ा नहीं होगा और अगर कोई इस से ग़द्दारी करेगा तो वह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 28 March 2024 Issue No. 13

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

उनकी जमात की हिमायत से वंचित होगा। अगर वह खड़ा भी हुआ तो जमात उस का फ़ेवर (favour) नहीं करेगी चाहे वह अहमदी हो। मुस्लिम लीग के केंडीडेट को बहरहाल हम स्पोर्ट करेंगे। इस मुलाक़ात के नतीजा में मुमताज़ दौलताना साहिब ने स्यालकोट के हलक़ा में एक अहमदी नवाब मुहम्मद दीन साहिब को भारी अधिकता से शिकस्त दी। शौकत हयात साहिब यह लिखते हैं कि कादियानी लोगों ने अपने अमीर के हुक्म की बजा आवरी में मुहम्मद दीन के बजाय मुमताज़ को वोट दिया और यह मुमताज़ दौलताना साहिब वही हैं जिन्हों ने 1953 ई. में अपनी हुकूमत में फिर अहमदियों के ख़िलाफ़ ही कार्रवाई की। अहमदी जितना मर्ज़ी उन लोगों की हिमायत करते रहें लेकिन ये लोग डिंग मारने से बाज़ कभी नहीं आते। शौकत हयात साहिब मज़ीद लिखते हैं। जब मैं पठानकोट पहुंचा तो क़ायद-ए-आज़म ने मौलाना मौदूदी साहिब से भी मिलने के लिए हुक्म फ़रमाया। वह चौधरी नयाज़ के गांव से मुत्तसिल बाग़ में रिहायश पज़ीर थे। जब मैंने उन्हें, मौलाना मौदूदी साहिब को क़ायद-ए-आज़म का पैग़ाम पहुंचाया कि वह पाकिस्तान के लिए दुआ करें और हमारी हिमायत करें तो उन्होंने उत्तर में कहा कि वे कैसे "न पाकिस्तान" अर्थात नापाक जगह के लिए दुआ कर सकते हैं। मज़ीद कहते हैं पाकिस्तान कैसे वजूद में आ सकता है कि जिस वक़्त तक समस्त हिंदुस्तान का हर व्यक्ति मुस्लमान नहीं हो जाता। जमात-ए-इस्लामी के क़ायद की यह बसीरत थी कि उस वक़्त तक पाकिस्तान वजूद में नहीं आ सकता।

(उद्धृत गुम गश्त क़ौम अज़ सरदार शौकत हयात। जंग पब्लिशरज़, पृष्ठ 195 इशाअत अव्वल दिसंबर 1995 ई.)

इस का अर्थ है उनके नज़रिया के मुताबिक़ तो आज तक नहीं आना चाहिए था। जमात-ए-इस्लामी के क़ायद की यह बसीरत, यह सरदार शौकत हयात लिखते हैं कि जमात-ए-इस्लामी के क़ायद की यह बसीरत और नज़रिया था। और दूसरी तरफ़ देखो मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद का क्या नज़रिया था। आज अहमदी इन तारीख़ से न-बलद सियासतदानों और नाम निहाद उल्मा की नज़र में देश के दुश्मन हैं जो देश के लिए हर क़ुर्बानी के लिए उसके वजूद के वक़्त भी तैयार थे और आज भी तैयार हैं और यह मुल्क बनाने के ख़िलाफ़ जो लोग हैं वह देश के ठेकेदार बने बैठे हैं। अल्लाह तआला जल्द उन ज़ालिमों से देश को निजात दिलाए।

फिर मुस्लमानों का दर्द रखते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो का एक कारना यह है। 1923 ई. में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तारीख़ शुद्धि के ख़िलाफ़ जिहाद का आग़ाज़ फ़रमाया। अर्थात हिंदू बनाने की तहरीक वह तहरीक जो श्रद्धानंद नामी एक हिंदू लीडर ने हिंदुस्तान में इन मुस्लमानों को दुबारा हिंदू बनाने के लिए चलाई थी जिनके बाप दादा कभी हिंदू थे। आपने एक के बाद एक ऑनरेरी मुबल्लग़ीन के वफ़ूद मलकाना के इलाक़े की जानिब रवाना किए।

इस हवाले से अख़बार मशरिक़ गोरखपुर ने 29 मार्च 1923 ई. की इशाअत में लिखा कि "जमात अहमदिया के इमाम-ओ-पेशवा की लगातार तक़रीरों और तहरीरों का असर उनके अनुयाइयों पर बहुत गहरा पड़ा है और इस जिहाद में इस वक़्त सब के आगे यही फ़िर्क़ा नज़र आता है और बावजूद इस बात के अहमदी फ़िर्क़ा के नज़दीक इस गिरोह नव मुस्लिम की ताईद की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि इस फ़िर्क़ा से इस का कोई ताल्लुक़ नहीं था परंतु इस्लाम का नाम लगा हुआ था इस लिए उस की शर्म से अर्थात कि इस्लाम के नाम की शर्म से "इमाम जमात अहमदिया को जोश पैदा हो गया और आपकी कुछ तक़रीरें देखकर दिल पर बहुत हैबत तारी होती है कि अभी ख़ुदा के नाम पर जान देने वाले मौजूद हैं और अगर हमारे उल्मा को इस बात का अंदेशा हो कि अहमदिया जमात अपने अक़ायद की तालीम देगी तो वह मुत्तफ़िक़ा जमात में .. ऐसा ख़ुलूस पैदा करके आगे बढ़ें।" फिर दूसरे मुस्लमान अगर उन्हें ख़तरा है कि जमात अहमदिया अपने अक़ायद न जारी कर दें तो फिर वह मुस्लमान सारे इकट्ठे हो जाएं, मुत्तफ़िक़ा जमाअत बनाएँ और एक ख़ुलूस पैदा करके आगे बढ़ें "कि सत्तू खाएं।" किस तरह करें जिस तरह अहमदी करते हैं। सत्तू खाएं "और चुने चबाएं और इस्लाम को बचाएं।' जो लोग वहां गए थे वह तो इस तरह गुज़ारा करते थे। कोई खाना पका हुआ नहीं मिलता था। चने खाते थे और सत्तू पीते थे। "जमात अहमदिया के लोगों में हम यह ख़ुलूस बेशतर देखते हैं।' कहते हैं कि जमात अहमदिया के लोगों में यह ख़ुलूस हम बेशतर देखते हैं। "दियानत, अह्द को पूरा करना, अपने इमाम की इताअत। अतः यह जमात के फ़र्द हैं। जनाब मिर्ज़ा साहिब और उनकी जमात की बड़े हौसले और ईसार की तारीफ़ के साथ मुस्लमानों को ऐसे ईसार की ग़ैरत दिलाते हैं। यह एक बन गए हैं और यह मुस्लमानों को ऐसे ईसार की ग़ैरत दिलाते हैं कि तुम भी इकट्ठे हो और ऐसा ईसार पैदा करो। "दियानत और अमानत जो मुस्लमानों की इमतेयाज़ी सिफ़तें थीं आज वह उनमें नुमायां हैं। जमात अहमदिया की फ़य्याज़ी और ईसार के साथ उनकी दियानत और आमद-ओ-ख़र्च के अबवाब की दरूस्तगी और बाक़ायदगी सबसे ज़्यादा काबिल-ए-सिताइश है और यही है कि बावजूद आमदन की कमी के ये लोग बड़े-बड़े काम कर रहे हैं।"

(मसीह मौउद और जमात अहमदिया इंसाफ़ पसंद अस्हाब की नज़र में मर्तबा मौलवी अब्दुल्मनान शाहिद पृष्ठ 261-262)

यह ग़ैर स्वीकार कर रहे हैं। यह दर्द था आप रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल में जिसके लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जमाअत में ख़ास तहरीक करके पूरी जमाअत को ही किसी न किसी रंग में इस काम पर लगा दिया और मुतहर्रिक कर दिया जिसके ग़ैराज़ जमात भी कायल हैं।

मिश साहिब एक प्रसिद्ध सहाफ़ी और सियास्तदान थे। क़लमी नाम उनका "मीम शीन" था। असल नाम मियां मुहम्मद शफ़ी था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात पर उन्होंने "लाहौर की डायरी" मैं लिखा कि "मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ने 1914 ई. में ख़िलाफ़त की गद्दी पर मुतमक्किन होने के बाद जिस तरह अपनी जमात की तंज़ीम की और जिस तरह सदर अंजुमन अहमदिया को एक फ़आल और जानदार इदारा बनाया इससे उनकी बेपनाह तंज़ीमी क़ुव्वत का पता चलता है। जबकि उनके पास किसी यूनीवर्सिटी की डिग्री नहीं थी लेकिन उन्होंने प्राईवेट तौर पर मुताला करके अपने आपको वाक़ई अल्लामा कहलाने का मुस्तहिक़ बना लिया था। उन्होंने एक दफ़ा एक इंटरव्यू में मुझे बताया था कि मैंने अंग्रेज़ी की महारत "सिवल ऐंड मिल्ट्री गज़्ट" के बाक़ायदा मुताला से हासिल की। उनके इरशाद के मुताबिक़ जब तक यह अख़बार ख़्वाजा नज़ीर अहमद के दौर मिल्कियत में बंद नहीं हो गया उन्होंने उसका बाक़ायदा मुताला जारी रखा। मिर्ज़ा साहिब एक निहायत सुलझे हुए वक्ता और मंझे हुए नस्र निगार थे और हर एक इस अवसर को बिलादिरेग़ इस्तिमाल करते थे जिससे जमाअत की तरक़्क़ी की राहें खुलती हों। जमाअती नुक्ता निगाह से उनका यह एक बड़ा कारनामा था कि तक़सीम बर्र-ए-सग़ीर के बाद जब कादियान उनसे छिन गया तो उन्होंने रब्वाह में दूसरा मर्कज़ क़ायम कर लिया।"

(रोज़नामा अल् फ़ज़ल 11 दिसंबर 1965 ई. पृष्ठ 5)

शेष अगले अंक में

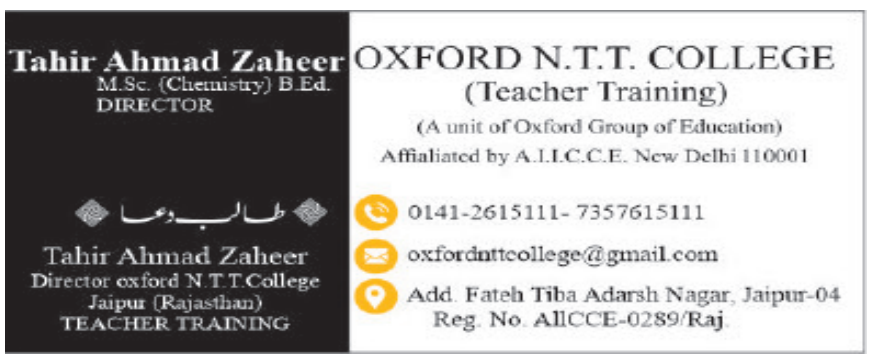

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad